(तीसरा हिस्सा)

अफ़कार

उम्मते मुस्लिमा के हालात, असरी तक़ाज़े और दावते फ़िक्र

1.उलमा ए दीन और सियासत
2.निज़ामे मुस्तफा से दूरी क्यूं?
3.इस्लाम दीन ए फ़ितरत है
4.नामूस ए सहाबा और मसलके अहले सुन्नत
5.हम मिलाद क्यूं मनाते हैं?
6.आलाहज़रत और रद्दे बिदआत
7.ग़ीबत की तबाहकारियां
8.गुस्से में खुद पर क़ाबु रखें
9.ख्वातीन का तबलीगे इस्लाम में किरदार
10.औरत के लिए परदा क्यूं?

नाशिरः
तहरीक निज़ामे मुस्तफा ﷺ

Book name : Afkar Part 3 (Magazine)

Language : Hindi

Author: Ulma e Ahle Sunnat

Translated by: Mohd Saquib

Hijri Date : 25 Jamadi ul Awwal 1442 H

English Date: 10 Jan 2020 (Sunday)

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: archive.org/detals/@tehreek_nizam_e_mustafa_

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

ABOUT US:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love Islam and keeps them firm on the creed Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

फ़हरिस्ते मज़ामीन

उल्माए दीन और सियासत

सदरुल अफ़ाज़िल सय्यद नईमुद्दीन मुरादाबादी अलेह रहमा

उल्माए दीन वारिसे अंबिया हैं। उन का वुजूद रहमत ए इलाही है जिस सरजमीं में एक आलिम ए दीन रौनक़ अफ़रोज़ हो वो रहमत व बरकत की मूरिद होती है और इस वुजूद ए मुबारक की बरकत से अल्लाह तआला बहुत सी आफ़तें बलाएं उस ख़ित्ते से दफ़ा फ़रमाता है। दीन का निज़ाम इसी गिरोहे हक़ पज़दह के साथ क़ायम है।

शरियते मुताहरा के यही मुहाफ़िज़ हैं। हमें मालूम है के यह हज़रात बहुत सादा ज़िन्दगी रखतें हैं। दुनयावी राहतों और लज़्ज़तों के सरोसामान से यह तबक़े का तबक़ा आरी है। बहुत सब्र व इस्तक़लाल के साथ रुखे फीके अय्याम सब्र व ख़ुशी के साथ गुज़ारने पर इन को हिम्मत है। इस पर मलामतों का निशाना बनना , बदगोययों की ज़ुबाने ताअन के तीर व सिनान से घायल होना , अहले दुनिया की कज ख़ुलक़ी के सितम बर्दाश्त करना , उनके मरदाना हौसले के लिए बहुत मामूली बात है।

यक़ीनन अगर दुनिया के दूसरे अशख़ास उनकी जगह पर आएं और जिस तरह इस मुक़द्दस तबक़े पर हर तरह के ताअन किए जाते हैं उन पर भी किए जाएं तो वह चन्द रोज़ सब्र न कर सकें और चीख़ कर भाग जाएं मगर उन्हें इब्तिदा ही से सब्र व ज़ब्त की तल्क़ीन की जाती है। मसायब व आलाम के बर्दाश्त करने पर जरी बनाया जाता है। तल्बे इल्मी ही के वक़्त में नफ़्स कशी के आला मनाज़िल तय कराए जाते हैं, और यक़ीन दिलाया जाता है के नाकरदा गुनाह के उन पर इल्ज़ाम लगाए जाएंगे। अरबाबे हिरस व हवा उनके दर पे होंगे। नफ़्सानियत की बिजलियां उन पर गिरेंगी, और उन को अपनी जगह पर साबित क़दम रहना पड़ेगा। तब वह मक़सूद जो हर चीज़ से ज़्यादा मरग़ूब व महबूब है (रज़ाए इलाही) उन्हें हासिल हो गा और इस आला मक़सद के लिए जो कुरबानी भी करनी पड़ेवो कम है।

दूसरी अक़वाम के उल्मा:

दुनिया की दूसरी कौमें अपने उल्मा का क्या एहतराम करती हैं , और उनको किस क़द्र व मन्ज़िलत के साथ आँखों पर बिठाती हैं। यह कुछ छुपी बात नहीं है। नसारा अगरचे कुल के कुल नेचरी और मज़हब से बे ताअल्लुक़ हो चुके हैं और मज़हब उनकी नज़र में बेकार चीज़ और महज़ बेकार बल्कि इल्म व तहज़ीब के लिए आर क़रार पा चुका है। रसमी तौर पर वह अपने आप को ईसाई कहते हैं और ईसाईयों के कुछ मरासिम बरतते हैं लेकिन बईं हमा पादरी और पोप वगैरह अपने पेशवायाने दीन की इस क़दर इज़्ज़त व हुरमत करते हैं और उनकेे हुक्म को मानने के लिए हर मनसब हर मरतबा हर वजाहत का शख़्स हर वक़्त गरदन झुकाने के लिए तैयार रहता है। बादशाह उनके सामने सरख़म करते हैं। और करोड़ों रुपया उन पर सर्फ़ कर डाला जाता है और इस सिलसिले का अदना से अदना शख़्स इस तमाम क़ौम के लिए अमलन मुस्तहिक़ होता है।

हिन्दू:

मज़हबी पेशवाओं को देवता मानते हैं और उन्होंने तो ब्रहमण की नस्ल ही को अपना आक़ा तस्लीम कर लिया है और जो हुक़ूक़ ब्रहम्णों के लिए मुकर्रर किए गए हैं उनकी मनुस्मर्ति में तफ़्सील है और उनका मुतालआ दुनिया को हैरत में डालता है।

रवाफ़िज़:

अपने मुजतहेदीन के साथ किस नियाज़ मन्दी का बरताव करते हैं। उनकी क़ौम का एक एक फ़र्द मुजतहिद के हुक्म को वाजिब उल इताअत जानता है और उस से उदूल इनहिराफ़ जुर्मे अज़ीम समझता है। किसी शहर में एक मुजतहिद का वुरूद हो तो वहां के हर एक राफ़्ज़ी के घर ईद हो जाती है। ज़ुबाने तान खोलना या बदगोई करना तो कुजा हज़रते क़िब्ला के सिवा उनका सादा नाम लेना भी इस जमात का कोई आदमी गवारा नहीं करता। दादो दहश जिस को वह नज़र व पेशकश कहते हैं, उसका क्या अंदाज़ा किया जाए, सौ सौ रुपया फ़ी तक़रीर मुकर्रर हैं। एक एक दिन में कई कई मजलिसें होती हैं और ख़्वाह वह कितनी देर भी तक़रीर करें। सौ रुपया शुक्र गुज़ारी व इत्मिनान के साथ उनकी ख़िदमत

में पेश कर दिए जाते हैं और फ़ख़्र किया जाता है के उनके यहां हज़रते क़िब्ला ने वचरूद फ़रमाया है।

बोहरा क़ौम:

अपने पेशवा को मुल्ला कहते हैं और बादशाह से ज़्यादा अपने मुल्ला की इज़्ज़त करते हैं। उसके हुक्म की तामील फ़र्ज़े क़तई जानते हैं और एतिक़ाद रखते हैं के मुल्ला उनके तमाम माल व औलाद का मालिक है। और इसी तरह का अमल दर आमद भी करते हैं। अगर उनका मुल्ला किसी दौलत मन्द को मुफ़्लिस होने का हुक्म दे दे तो वह शख़्स एक हुब्बे का मालिक न रहेगा। उसका माल जिसे चाहे अता करे। किसी को हक़्क़े ऐतराज़ नहीं। करोड़पती बोहरे मुल्ला साहब की सवारी के साथ नंगे पांव दौड़ते चले जाते हैं।

ग़र्ज़ दुनिया में हर क़ौम अपने दीनी पेशवाओं का कमाल एहतराम करती है और यही चीज़ है जिस से मज़हब ज़िन्दा और बाक़ी रहते हैं और शीराज़ा ए मिल्लत मुन्तशिर नहीं होने पाता और क़ौम की इजतिमाई हैसियत महफ़ूज़ रहती है। इन तमाम अक़वाम में तालीम याफ़्ता भी हैं, लीडर भी हैं। प्लीटर भी हैं। एडीटर भी हैं लेकिन कोई भी अपने पेशवायाने मिल्लत के इज़्ज़त व वक़ार का दुश्मन नहीं है। कोई उनके इज़्ज़त व मनसब का ख़्वाहा नहीं। कोई उनके असर को मिटाकर अपना इक़्तिदार पैदा करने की हिरस नहीं रखता। किसी का यह ख़्याल नहीं होता के मज़हबी पेशवाओं के असर व इक़्तदार को मिटाने ही में हमारी इज़्ज़त है। इसलिए वह तमाम क़ौमें मज़बूत हैं। क़वी है , मुनज़्ज़म हैं। दुनिया में दुनियवी हैसियत से वज़न रखती हैं। अगरचे उनकी तादादें क़लील हों मगर उनका यह तरीक़ा ए अमल और मज़हब व अहले मज़हब के साथ गिरवीदगी उनको ज़बरदस्त बनाए हुए हैं। मुसलमान भी अपने उरूज के अहद में पेशवायान दीन की बदर्जा ए ग़ायत तन्ज़ीम व तकरीम करते थे।उनकी क़द्र व मन्ज़िलत अपनी सआदत जानते थे। उनके अहकाम के सामने गर्दन झुका देना उनका शेवा था। उल्मा की ज़ियारत के लिए मन्ज़िलों के सफ़र करते थे। अगर किसी ज़मीन में किसी आलिम का गुज़र हो जाता तो वहां के बाशिंदे उसको अपनी ख़ुशबख़्ती समझते थे जब तक मुसलमानों में यह ख़सलत रही उनका शीरा ए

इजतिमा मुन्तशिर न हुआ। दुनिया की आंखें उनके आफ़ताब ए शौकत व इजलाल की शुआओं से जीती रहीं। इज़्ज़त व इक़बाल क़दम बोसी करते रहे। आज जो मुसलमानों पर नकबत है, उनके मुहासिन उनसे रूठ गए। ख़साइले हमीदा ने साथ छोड़ दिया है। रज़ायल अख़लाक़ और बद ऐतवारी का सैलाब उमंडता चला आता है। यह नेमत भी उनके हाथ से जाती रही। अदब , तवाज़ो, हिल्म, सिपासगुज़ारी मोहसिन शनासी , क़दरदानी की जगह नख़वत, ग़ुरूर, ख़ुदनुमाई, ख़ुदबीनी, नाक़दरी, बेमुरव्वती, सरकशी ने ले ली है। तो अकाबिर की ताज़ीम बुजुर्गों का अदब व तौक़ीर पेशवायाने दीन का अदब व एहतराम उनके लिए क़ाबिल ए रश्क बन गया। एडिटरों के क़लम उल्मा व मशाईख़ की तौहीन के लिए रहन हो चुके। बेक़ैद अख़बार नवीस रोज़ाना की इशाअतों में बरसों तक तबर्रा कर के सैर नहीं हुए , और उनकी आतिशे ग़ैज़ो ग़ज़ब के शोले धीमे नहीं पड़े। उनके गुस्से में कुछ भी कमी नहीं आई। उनके शबदेज़ क़लम की जौलानियां रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी पर हैं। यह बहादुर सय्याद अपने घर के बुज़ुर्गो ही को तेगे ज़ुल्मो जफ़ा का निशाना बनाते रहते हैं और उनकी शुजाअत व बहादुरी के तमाम जौहर यही हैं के वह उल्मा व मशाईख़ की मुक़द्दस हस्तियों को दिल भर के कोस लिया करते हैं और बे मुहाबा सब्बो दुशनाम की बारिशें कर के अदब व तहज़ीब का ख़ून बहा देते हैं।

लीडर साहब:

मुसलमानों में माशाअल्लाह लीडर बहुत हैं और इस मनसबे आला के लिए न किसी इम्तिहान की शर्त न काबिलियत का कोई मियार मुअय्यन। जिसे दुनिया में कहीं जगह न मिली, मुआश का कोई माक़ूल ज़रिया हाथ न आया , और हुए ख़ुश ख़ुराक व ख़ुश पोशाक फ़ैशनेबल उनके लिए बेहतरीन काम यह है कि लीडर बन जाएं। लीडर बन कर कहीं सर कटाने तो जाना नहीं होता उल्मा और मशायख़ और पेशवायाने दीनो मज़हब की मुक़द्दस ज़ातों पर हमला करो और चैन उड़ाओ उन्हें गालियां दें और आप मुस्लिम लीडर बनें। उन हज़रात के दिमाग़ों में यह बात मरकूज़ होती है के आम्मा ए मुस्लेमीन पेशवायान दीन के

वाबस्ता ए अक़ीदत हैं, जब तक उन्हें उल्मा से बदज़न न किया जाएगा, यह हमारे हत्थे नहीं चढ़ेंगे।

और वह बे दीनी और मग़रिबी बेहमियती जिसके यह हज़रात इल्म बरदार होते हैं , उस वक़्त तक रायज ही नहीं हो सकती जब तक दुनिया में पेशवायाने दीन का असर बाक़ी है। औरतों को बे परदा फिराना , थेटरों में ले जाना , सैरगाहों पर उनकी इफ्फ़त को रुसवा करना , होटलों में हलाल व हराम के इम्तियाज़ को उठाना , जब ही मयस्सर आएगा , जब उल्माए दीन की तरफ़ से लोगों को बरगशता कर लिया जाए। उनका नस्बुल ऐन तब्क़ा ए उल्मा की मुख़ालफ़त है और उसी को यह बहुत बड़ी मुहिम जानते हैं। उनके अक़ीदे में तरक्क़ी और कामयाबी का बस यही एक ज़रिया है के उल्माए दीन पेशवायाने मिल्लत से अदावत की जाए। अब चाहे इस तरीक़ा ए अमल से आम्मातुल मुस्लेमीन आज़ुरदाह ख़ातिर हों, रंजीदाह हों, उनके दिल दुखें, क़ौम में तिफ़रक़ा हो जाए, जंग हो, फ़ितना फ़साद उठें। यह सब कुछ गवारा मगर उल्मा की तरफ़ से जो आतिशे हसद सीने में भड़क रही है वह किसी तरह साकिन नहीं होती। इस मक़सद के लिए किताबें तसनीफ़ की जाती हैं। रिसाले निकाले जाते हैं। तक़रीरें की जाती हैं और जहां मौक़ा मिल जाता है अमली तौर पर भी इस पाक़ तब्क़े की ईज़ा रसानी और इहानत में कमी नहीं की जाती। फिर किस तरह निज़ामे क़ौमियत मज़बूत हो? जिस क़ौम के अफ़राद ख़ूंखार दरिंदों की तरह अपनों ही को फाड़ खाने के लिए हर वक़्त तैयार रहते हों। उस की फ़लाह की क्या उम्मीद। वह दूसरों का मुक़ाबला किस बूते पर करेगी? और इस के लिए तरक़्क़ी की क्या सबील होगी ? अब उन लीडरों की ज़हनियत और उनके तरीक़ा ए अमल को दूसरी अक़वाम के लीडरों की ज़हनियत और तर्ज़े ज़िन्दगानी से मुक़ाबला कीजिए और फिर यह देखिए के मुसलमानों के अहदे कामयाबी में उल्मा के साथ उनके मुक़तदिर तब्क़ों का जो तर्ज़े अमल था , उससे मौजूदा ज़माने के दावादाराने लीडरी को क्या निसबत? दीने इस्लाम ने उल्मा की ताज़ीम व तौक़ीर और उनकी इताअत व फ़रमाबरदारी फ़र्ज़ की है और मुसलमानों को इसकी बहुत ताकीदें फ़रमाई हैं। इस तब्क़े को वारिसुल अंबिया बताया है। और उनके ख़्वाब तक को इबादत ठहराया है। उनकी दवातों की स्याही शोहदा के ख़ूनों की हम वज़न क़रार दी है।

इस हालत में उल्मा से बेताल्लुक़ी और उनकी मुख़ालिफ़त क़ौम को फ़लाह व कामयाबी तक क्यों कर पहुंचने देगी ? न दीन के ऐतबार से यह फ़ेल जायज़ है , न दुनिया के। फिर उसको ज़रिया ए कामयाबी समझना ख़लले दिमाग़ नहीं तो क्या है ? ख़ुद पसंद तबक़ा जो अपनी नादानी को हमादानी समझता है। जिस को न तालीम याफ़्ता कहते हैं, जब वह दीन से बाख़बर ही नहीं तो दीन की हिमायत, दीन की हिफ़ाज़त दीन का एहतराम वो किस तरह कर सकता है? यही सूरत थी के वो उल्माए दीन के सामने सरे नियाज़ झुकाता मगर उसकी ख़ुदबीनी, ख़ुद पसन्दी और ग़ुरूर व ख़ुदनुमाई उसको उससे मानेअ है तो वह मुसलमानों के क्या काम आ सकता है?

शौक़े हुकूमत:

हुकूमत का सौदा उनके सरों में रहता है। बल्कि बाज़ तो इस क़दर बेदीन हो गए हैं के वह अपने आप को मुसलमान कहने या कहलाने का सिर्फ़ इतना ही फ़ायदा समझते हैं के मुसलमानों के वोट से उनको मजलिस में इज़्ज़त की कुर्सी मिल जाए। इन्तिख़ाबात के वक़्त इन हज़रात की वारफ़्तगी और सरासीमगी क़ाबिल दीद होती है। मिल्लत के लिए क़ौम के लिए, अपने अएज़्ज़ा व अक़ारिब के लिए , उसका हज़ारवां हिस्सा भी मेहनत व कोशिश न की होगी जो वोट हासिल करने के लिए की जाती है। हर शख़्स की खुशामद है सिफ़ारिशें ला रहे हैं। रुपए सर्फ़ कर रहे हैं। रात दिन दौड़े फिर रहे हैं। मुक़ाबिल अगर कोई दोस्त है तो पासे दोस्ती नहीं। अगर कोई अज़ीज़ है तो परवाए क़राबत नहीं। ख़ानाए मुरव्वत को पहले ही आग लगा दी जाती है। इस बात पर नज़र नहीं के दूसरा मुझ से ज़्यादा लायक़ है ज़्यादा तजुर्बा कार है। काम का ज़्यादा अहल है। क़ौम को इस से नफ़ा पहुंचने की उम्मीद है। इसलिए इस के वास्ते जगह ख़ाली कर दे। यह कहां ? पमफ़्लेट बाज़ी होती है। और वाक़ई और ग़ैर वाक़ई मआइब के तूमार शाया कर के एक इज़्ज़तदार आदमी को मतऊन किया जाता है। हिरसे जाह का यह जोश रास्त बाज़ी व रास्त पसन्दी और इन्सानी शराफ़त को फ़ना कर देता है। और आदमी दूसरे की ख़ूबियों से दीदह व दानिस्ता मुनिकर होकर ख़ुदसताई करता फिरता है। किराये के मद्दाह तलाश किए जाते हैं। ऐसे हज़रात

किसी इज़्ज़ो जाह को देख सकें, किसी की ख़ूबी का एतराफ़ करें ऐसी उम्मीद रखना उनसे अबस है।

तब्क़ा ए उल्मा की निसबत तो उन्होंने मशहूर कर दिया है के यह सियासियात से महज़ नाबलद हैं और उनको नज़्मो नस्क़ के किसी काम में दख़ल देना भी न चाहिए। यह भी इसी जज़्बा ए हिर्स व आज़ और शौक ए जाह का एक चुटकुला है के इल्मो फ़ज़ल वाला तब्क़ा अगर इस तरफ़ मुतवज्जा हो गया तो बहुत सी नशिसतें ले जाएगा और यारगोओं के लिए कुर्सियां कम रह जाएंगी। तब्क़ा ए उल्मा जो इल्मी दक़ायक़ को हल करने में मशाक़ है, और जिस का दिमाग़ बेहतरीन मालूमात से रौशन हो रहा है। अगर वह दुनियवी इंतिज़ाम की तरफ़ अपनी तवज्जो मुनअतिफ़ करे , तो वे कोफ़्तो कुल्फ़त उनसे बदरजहा बेहतर काम अन्जाम दे सकता है। मगर वो तब्क़ा इंकिसार, तवाज़ो, ईसार का आदी है। ख़ुदनुमाई और जाह तल्बी से मुतानफ्फ़र है। इसलिए कभी इस मैदान में क़दम नहीं रखता।

उल्मा सियासत की तरफ़ तवज्जो फ़रमाएं!

लेकिन मैं अर्ज़ करूंगा के उल्माए दीन व पेशवायान ए इस्लाम अब क़दम उठाएं। गोशा ए तन्हाई से निकलें। इसलिए नहीं के उन्हें जाह मिले या मनसब मिले। इसलिए नहीं के हुकूमत का मज़ा हासिल करें फ़क़त इसलिए के दीन की हिफ़ाज़त हो। इस्लाम और मुसलमानों के मफ़ाद के ख़िलाफ़ पेश होने वाले तजावीज़ को वो रोक सकें और मुसलमानों के मुस्तक़बिल को ख़तरे से महफ़ूज़ रख सकें। जो क़ानून एक दफ़ा पास हो जाता है फिर उसके ख़िलाफ़ कामयाबी हासिल करना बहुत दुश्वार हो जाता है , अगर असेम्बली में उल्मा का भी कोई उन्सर होता तो सारदा का क़ानून पास न हो सकता और मुसलमान मेम्बर पहले ही रोज़ बेदार कर दिए जाते लेकिन क़ानून पास होने के बाद जो कोशिशें की गईं वो उस वक़्त तक नतीजा ख़ेज़ साबित न हुईं। तब्क़ा ए उल्मा का सियासियात और मुल्की नज़्म की तरफ़ से इग़माद(ला परवाही) करना मुसलमानों को ज़रूर नुक़सान पहुंचाता है। इस वक़्त गोल मेज़ कान्फ्रेंस इजलास कर रही है। हिन्दुस्तान

के लिए दस्तूरे हुकूमत ज़ेरे तजवीज़ है। हर फ़िरक़े के नुमाइंदे वहां पहुंच गए हैं। सब ने अपने अपने मुतालबात का एक एक मसोदा मुरत्तब कर लिया है। हर एक अपने मक़ासिद का एक नक़्श नज़र के सामने रखता है। लेकिन हमें शिकायत है और बजा शिकायत है के हमारे तब्का ए उल्मा ने आज तक इस तरफ़ इल्तिफ़ात न किया। जो जो मसौदे तजवीज़ हुए उन पर नज़र न डाली , और यह न देखा के इस्लाम व मुस्लेमीन पर उन का क्या असर पड़ता है और इस्लाम के तहफ़्फ़ुज़ और मुसलमानों की फ़लाह और मज़हब की हिफ़्ज़ो हुरमत के लिए क्या उमूर ज़रूरी हैं ? जान कर मौजूदा तजवीज़ों में इज़ाफ़ा होना चाहिए और कौन चीज़ें क़ाबिले एहतिराज़ हैं जिनकी मुदाफ़िएत लाज़िम है ? हिन्दुस्तान का तमाम तब्क़ा ए उल्मा इस सिरे से उस सिरे तक साकित व ख़ामोश है। उन्होंने इस पर नज़र ही नहीं डाली। क्या हैसियते दीन से यह कोई ज़रूरी अमर नहीं है। अगर गुज़िश्ता छोड़िए अब आइन्दा के लिए मुस्तइद हो जाइए और जल्दतर एक नज़र डालिए के दुनिया क्या कर रही है मुसलमानों के मुस्तक़बिल के लिए क्या क्या तजवीज़ें दरपेश हैं ? उन के क्या नताइज होंगे? ज़रूरियात का इक़्तिज़ा (तक़ाज़ा) क्या है?

पहले कुछ राए हो उस से एक इज्तेमाई शक्ल में अपने नुमाइंदों को ब-ख़बर कीजिए पहली ग़फ़लत क़ाबिले अफ़सूं है?

लेकिन अगर अभी और ग़फ़लत रही तो काम क़ब्ज़े से बाहर हो जाएग जिस तरह मुमकिन हो सूरत ए हालात पर इत्तिला पाने के बाद एक मसोदा तजावीज़ मुरत्तब कीजिए और ख़्वाह जलसों में या डाक के ज़रिए इस पर दूसरे उल्मा की राय हासिल करके एक नक़्शा ए अमल मुरत्तब फ़रमाएं। काउंसिलों की कार्यवाहियों को भी देखिए और मेम्बराने काउन्सिल को जिस अम्र में तवज्जो दिलाने की ज़रूरत हो उन्हें ज़ोर के साथ तवज्जो दिलाइए। यह भी देखिए के डिस्ट्रिक्ट और मियुन्सिपल बोर्डों में क्या हो रहा है ? आप को जल्द से जल्द मुस्तइद हो जाना चाहिए और अगर जमात ए उल्मा इस तरह मैदान ए अमल में आ गई तो इंशाअल्लाह अज़ीज़ुल इस्लाम व मुस्लेमीन की बहुत बड़ी हिमायत हो सकेगी।

सितम है के जाहिल आलिम नुमा , आलिम बनकर मैदान में आएं , और उनकी तादाद से दुनिया को धोका दिया जाए, और उनकी ख़ुदराई व नफ़्स परस्ती उल्मा की राय क़रार दिया जाए उल्मा का पूरा तब्क़े का तब्क़ा साकित व ख़ामोश बैठा यह सब कुछ देखा करे न उसके मुंह में ज़ुबान हो , न ज़ुबान में हरकत , न हाथ में क़लम , न क़लम में जुंबिश। अब आप का तक़ाउद ज़ुहद व इंकिसार की हद से गुज़र कर ग़फ़लत व तकासुल के दायरे में आ गया है। और इस अंदाज़े सकूत से इस्लाम को नुक़सान पहुंच रहे हैं। अब आप इस अक़ीदह को छोड़ दीजिए के आपके फ़रायज़ एक मजलिस में वाज़ कह कर, या एक हल्क़े में दर्स देकर अपने ख़लवत ख़ाना में फ़तवे लिखकर अदा हो जाते हैं, और आपको इस पर नज़र डालने की ज़रूरत ही नहीं है , के दुनिया में क्या हो रहा है ? और बद्ख़वाहान इस्लाम तख़रीब के लिए क्या क्या तदाबीर अमल में ला रहे हैं। यक़ीनन यह का फ़र्ज़ है और आप से इस के मुताल्लिक़ सवाल किया जाएगा। उठिए और अपने फ़र्ज़ को अदा कीजिए।

[अस-सवादुल आज़म, रजब उल मुरज्जब 1349 हिजरी पेज 2-7]

निज़ामे मुस्तफा ﷺ से दूरी क्यूं ?

मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

इन्सानी ज़िन्दगी इब्तिदा से इन्तिहा तक निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ की मोहताज है बग़ैर निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ के इन्सानी ज़िन्दगी में कोई हुस्न बाक़ी नहीं रहता है इन्सानी ज़िन्दगी अदलो इंसाफ, अख़लाक़ो मोहब्बत, शर्मो हया से आरी नज़र आती है। जैसे जिस्म के लिए रूह का होना ज़रूरी है इसी तरह इंसानों को अपनी ज़िन्दगी अच्छी तरह बसर करने के लिए निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ के मुताबिक अमल करना ज़रूरी है।

फलसफ़ा ए अम्ली जब वुजूद में आया तो उसने दुनिया के सामने अपना दस्तूर पेश किया। तहज़ीब, अख़लाक़, तदबीरे मंज़िल, सियासते मदनिया का सबक़ दुनिया को दिया लेकिन निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ के आने के बाद फ़लसफ़ा ए अमली का सारा दस्तूर मतरूक होकर रह गया क्योंकि निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ ने जो दस्तूर पेश किया उसके सामने तालीमे फ़लासफ़ा की हाजत न रही।

निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ जहां एक मज़हबी दस्तूर अमल पेश करता है वही मुआशरती , सियासी, समाजी, मुआशी मसाइल का भी तदारुक करता है इन्सान की ज़िन्दगी का कोई भी गोशा हो चाहे दीनी हो या दुनियावी , यह निज़ाम हर गोशे में रहनुमाई करता नज़र आता है।

निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ और मसावात:

हुज़ूर ए अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

لا فضلَ لعربيٍّ على عجميٍّ ، ولا لعجميٍّ على عربيٍّ ، ولا لأبيضَ على أسودَ ، ولا لأسودَ على أبيضَ : إلَّا بالتَّقوَى

“किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई फ़ज़ीलत व बरतरी हासिल नहीं और न ही किसी अजमी को किसी अरबी पर और न ही किसी काले को किसी गोरे पर और न ही किसी गोरे को किसी काले पर कोई बरतरी हासिल है मगर तक़्वा से”।

अल्लाहु अकबर! ऐसा दस्तूर शायद ही किसी मज़हब में मौजूद हो। जो निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ में पाया जाता है। फ़ज़ीलत और बरतरी की बुनियाद तक़्वा और परहेज़गारी पर रखी। रंग व नस्ब और क़ौमियत की बुनियाद पर तफ़रीक़ हो सकती थी निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ ने उसकी जड़ें काट कर रख दीं।

मसावात की मिसाल देखनी हो तो मसाजिद में पांच वक़्तों की नमाज़ों में लगी हुई सफ़ों को देखो जहां ग़रीब, अमीर, काले, गोरे सब एक ही सफ़ में नज़र आते हैं।

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूद ओ अयाज़,

न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़

इन्सानियत का मुहाफ़िज़ निज़ाम मुस्तफ़ा ﷺ:

इन्सान की जान व माल इज़्ज़त व आबरू का सही मुहाफ़िज़ निज़ाम मुस्तफ़ा ﷺ ही है। हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

“के मैं हर मुसलमान की जान व माल का मुकम्मल तहफ़्फ़ुज़ देने का ज़िम्मेदार हूं”।

एक जगह इरशाद फ़रमाया:

“के हर मुसलमान का ख़ून माल और इज़्ज़त व आबरू दूसरे मुसलमान पर हराम है”।

हुक़ूक़े इन्सानियत और निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ

हुज़ूर ए अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

“मोमिन वो नहीं है जो ख़ुद तो पेट भर के खाए मगर उसका पड़ोसी उसके क़रीब में भूखा रहे”।

आप ﷺ ने फ़रमाया:

“भूखे को खाना खिलाओ और मरीज़ की अयादत करो”।

“एक शख़्स नबी करीम ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह ﷺ लोगों में सबसे ज़्यादा मेरे हुस्ने सुलूक का हकदार कौन है ? आप ﷺ ने फ़रमाया तेरी मां। उस शख़्स ने दो मरतबा और यही सवाल किया और आप ﷺ ने दोनों बार यही जवाब दिया यानी तेरी मां। एक मर्तबा और अर्ज़ करने पर आप ﷺ ने फ़रमाया तेरा बाप”।

शरमो हया और निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ:

हुज़ूर ए अकरम ﷺ ने फ़रमाया:

الحياء شعبة من الإيمان

“हया ईमान के शोबों में से है”।

शरमो हया को ईमान का हिस्सा बताया यानी इन्सान जितना ब-हया होगा उसका ईमान उतना ही कामिल होगा।

फ़िज़ूल ख़र्ची और निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ:

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

“फ़िज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है”।

“नबी करीम ﷺ हज़रत साद के पास से गुज़रे जब वो वज़ू कर रहे थे तो फ़रमाया ऐ साद! ये इसराफ़ (फ़िज़ूल ख़र्ची) कैसा ? अर्ज़ की! क्या वज़ू में भी इसराफ़ है। फ़रमाया हां! अगरचे तुम बहती नहर पर हो”।

हमने चंद अहादीस से निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ का दस्तूर आप के सामने पेश किया जो इन्सानियत के लिए मुज़दहे जाँ फ़िज़ा है।

अब बात इतनी सी है के जब हर तरह का सुकून व राहत निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ में है तो हम इस से क़रीब होने की बजाय दूर क्यों होते जा रहे हैं?

निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ से दूरी आख़िर क्यों?

इन्सान की फ़ितरत है के जिस तरफ़ उसे आसानी दिखाई देती है वह उसी तरफ़ रुजू करता है लेकिन यह बात समझ से परे है के निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ जो इफ़रात व तफ़रीत से मुबर्रा है उस से मुसलमान दूरी क्यों बना रहे हैं? और मग़रिबी तहज़ीब के दिलदादह क्यों बने हुए हैं?

हमारे बचपन से लेकर जवानी और जवानी से लेकर बुढ़ापे तक के सारे मरहले मग़रिबी तहज़ीब के साए के तले तय हो रहे हैं घर हो या बाज़ार, शहर हो या देहात हर जगह मग़रिबी तहज़ीब का रंग चढ़ा हुआ है बच्चे की पैदाइश के बाद उसकी तालीम व तरबियत मग़रिबी तहज़ीब के मुताबिक हो रही है जिस का असर उसकी जवानी पर मुरत्तब हो रहा है और फिर वही बच्चा अपने बाप का बाग़ी , हुस्ने अख़लाक़ से ना आशना नज़र आ रहा है शर्मो हया उसमें दाख़िल ही नहीं हो पा रही है। बड़ों का बेअदब हो रहा है और न जाने कौन कौन सी बुराइयों के दलदल में फंसता दिखाई दे रहा है।

आख़िर ऐसा क्यों है? जवाब इसका यह है कि हम निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ से किनारा कश हो गए हैं अल्लाह उसके रसूल ﷺ के अहकाम की फरमाबरदारी नहीं कर रहे हैं। हमने मग़रिबी तहज़ीब को अपना ओढ़ना बिछोना बना लिया है। हमारी फ़िक्रें मग़रिबी तहज़ीब की बेड़ियों में क़ैद हो चुकी हैं। हमारे दिल हक़ व बातिल में तमीज़ करने से क़ासिर हो चुके हैं। हमारी आंखों में ईमान की रोशनी देखने की ताब बाक़ी नहीं बची है।

अब इसका हल डॉ० मोहम्मद इक़बाल के अशआर में आपको मिल जाएगा

भटके हुए आहू को फिर सूए हरम ले चल

इस शहर के ख़ूगर को फिर वुसअते सहरा दे।

पैदा दिले वीरां में फिर शोरिशे महशर कर

इस महमले ख़ाली को फिर शाहिदे लैला दे

इस दौर की ज़ुल्मत में हर क़ल्बे परेशां को

वो दाग़े मोहब्बत दे जो चांद को शरमा दे

रिफ़अत में मक़ासिद को हमदोशे सुरय्या कर

ख़ुद्दारि ए साहिल दे, आज़ादी ए दरिया दे

बे लौस मोहब्बत हो, बे बाक सदाक़त हो

सीनों में उजाला कर, दिल सूरत ए मीना दे

एहसास इनायत कर आसार ए मुसीबत का

इमरोज़ की शोरिश में अन्देशा ए फ़रदा दे।

हमें फिर से अपने माज़ी की तरफ़ पलटना होगा। हमें उसी निज़ाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना होगी जिसने हमें जीने का हक़ दिया , जिसने ग़रीबों, लाचारों, मिस्कीनों को आसरा

दिया, जिसने ख़ूनी रिश्तों का लिहाज़ बताया , जिसने शरम व हया का पैकर इन्सानों को बनाया, यानी वही निज़ाम जो मेरे आक़ा व मौला मोहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ आज से १४५० साल पहले लेकर इस दुनिया में तशरीफ़ लाए थे।

अगर आज भी हम अपने मुआमलात निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ के मुताबिक़ हल करें तो उरूज की मन्ज़िलों तक पहुँच सकते हैं। मग़रिबी तहज़ीब तो ज़मीर को गन्दा कर देती है,

फ़साद ए क़ल्बो नज़र है फ़िरंग की तहज़ीब

के रूह इस मदनियत की रह सकीं न अफ़ीफ़

मग़रिबी तहज़ीब से बचने का अगर कोई तरीक़ा है तो वह यह है कि अपने आप को निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ का पाबन्द बना लो फिर तुम ख़ुद देखोगे के तुम्हारी ज़िन्दगी में कैसा इंक़लाब आता है अपने पैदाइश से लेकर मौत तक के तमाम उमूर निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ की रौशनी में हल करो लोगो को भी इसकी तरग़ीब दिलाओ। निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ ही में दुनिया और आख़िरत की भलाई है और यही निज़ाम सारी इन्सानियत के लिए सब से बेहतर है।

चाहते हो तुम अगर निखरा हुआ फ़रदा का रंग,

सारे आलम पर छिड़क दो गुम्बदे ख़िज़रा का रंग।

अल्लाह तआला हमें निज़ाम ए मुस्तफ़ा ﷺ के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, अल्लाह हमारा हामी व नासिर हो।

इस्लाम दीने फितरत है

अज़मत हुसैन क़ादरी मन्ज़री

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمدللہ رب العالمین و الصلات والسلام علیٰ سید المرسلین اما بعد*

فاقم وجھک للدین حنیفا فطرت اللہ التی فطر الناس علیھا لاتبدیل لخلق اللہ ذالک الدین القیم ولکن اکثر الناس لا یعلمون

“तो अपना मुंह सीधा करो अल्लाह की इताअत के लिए एक अकेले उसी के होकर अल्लाह की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई चीज़ न बदलना यही सीधा दीन है मगर बहुत से लोग नहीं जानते”।

तख़्लीक़े क़ायनात से लेकर तुलूए इस्लाम तक बेशुमार ऐसे मज़ाहिब दुनिया में आए जिसमें बहुत सी ख़ूबियां और अच्छाइयां थीं। इन मज़ाहिब ने बनी नौए इन्सान को इबादत , नेकी की तरग़ीब दी गुनाहों और बुरी बातों से बचने की हिदायत की दुनिया और आख़िरत के मुआमले में भी हत्तल इमकान मख़लूक़े ख़ुदा की रहनुमाई की लेकिन इनमें से अक्सर मज़ाहिब सच्चे और इल्हामी होने के बावजूद चूंकि मुकम्मल नहीं थे और उनमें न तो बनी नौए इन्सान की इजतिमाई तरक़्क़ी का साथ देने की सलाहियत थी इसलिए इन्सान रफ़्ता रफ़्ता इन मज़ाहिब से हटते चले गए और दुनिया लामज़हबी और गुमराही की तारीकी में मुब्तिला हो गई। मज़हब से हट जाने के बाद इन्सान की हालत यह हो गई के ख़ुदा और बन्दे का ताल्लुक़ ख़त्म हो गया लोगों के ज़हनों और दिलों में फ़िस्क़ो फ़ुजूर पैदा हो गया। मुआशरती निज़ाम में फ़साद बरपा हो गया , हलाल व हराम की तमीज़ बाक़ी न रही , गुनाह और सवाब में इम्तियाज़ ख़त्म हो गया , क़त्लो ख़ून , आबरूह रेज़ी और बरबरियत के मनाज़िर आम हो गए , यहां तक के इन्सान जानवरों से बदतर ज़िन्दगी बसर करने लगा , अज़ मशरिक़ ता मग़रिब, अज़ शुमाल ता जुनूब दुनिया के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जब दरिन्दगी फ़िरक़ा परस्ती और शहवानियत की तारीकी फैली हुई थी और दुनिया में

जिहालत का सबसे बड़ा मरकज़ मुल्के अरब बना हुआ था तो ऐसे पुर फ़ितन दौर में ज़रूरत थी एक ऐसे तबीब की जो इन तमाम बीमारियों का ख़ात्मा कर दे और इन्सान को राहे मुस्तक़ीम पर गामज़न कर दे तो अरब की सरज़मीन पर अल्लाह तआला ने अपने महबूब पैग़म्बर हुज़ूर ﷺ को मबऊस फ़रमाया। आप ﷺ ने क़ुरआने करीम की तालीम , और अपनी सीरते तय्यबा व अख़लाक़े अज़ीमा के ज़रिए इस तारीक दुनिया को रौशन व मुनव्वर फ़रमाया।

इस्लाम की सबसे बड़ी और इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत यह भी है के इसने किसी साबिक़ा मज़ाहिब की तकज़ीब नहीं की बल्कि यह ख़ुद एक कामिल व अकमल मज़हब बनकर आया इसलिए साबिक़ा मज़ाहिब ख़ुद ब ख़ुद मनसूख़ हो गए और हुज़ूर ﷺ ने गुमराह इन्सानों को जिस दीने इस्लाम से आगह फ़रमाया वह एक मुकम्मल सच्चा फ़ितरी मज़हब है जो ऐन फ़ितरते इन्सानी के मुताबिक़ है चुनान्चे इसी दीने हनीफ़ के बारे में इरशाद बारी तआला है-

فاقم وجھک للدین حنیفا فطرت اللہ التی فطر الناس علیھا لاتبدیل لخلق اللہ ذالک الدین القیم ولکن اکثر الناس لا یعلمون

यानी ख़ुद अल्लाह तआला इरशाद फ़रमा रहा है के अब तुम को कामिल तरीन दीन अता कर दिया गया है इसके बाद तुम्हें किसी नामुकम्मल दीन की जरूरत नहीं है। बस अपना रुख़ इसी दीने फ़ितरत यानी दीने इस्लाम की तरफ़ करलो क्योंकि यह वही दीन है जिसके मुताबिक़ तुम्हें पैदा किया गया है और यही फ़ितरते इन्सानी के मुताबिक़ है। दीने इस्लाम तमाम अदियान व मज़ाहिब में इस लिहाज़ से भी इम्तियाज़ी मक़ाम का हामिल है के इसका मक़सद यह है के इन्सान का ताल्लुक़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से बेहतर और मज़बूत हो जाए। और इन्सान हमा वक़्त अल्लाह की रज़ा जोई में लगा रहे के यही उसकी ज़िंदगी का मक़सद बन जाए।

इस्लाम के और भी इन्सानी इस्लाही और मुआशरती अहम मक़ासिद हैं मगर असलुल उसूल और सब से बड़ा मक़सद इन्सान को तलबे रज़ाए इलाही में लगाना है। पैग़म्बराना तालीमात का इस पशे मन्ज़र में अगर जायज़ा लिया जाए तो मुतअद्दिद बुनियादी अनावीन पर मुश्तमिल नज़र आती है जिनमें से चन्द का यहां मुख़्तसर ज़िक्र किया जाता है।

(1) पैग़म्बरे आज़म की तशरीफ़ आवरी से पहले दुनिया शिर्क बुत परस्ती में पूरी पूरी डूबी हुई थी रसूले अकरम ﷺ ने शिर्क से डूबी हुई दुनिया को अक़ीदा ए तौहीद की नेमत अता की और फिर ख़ालिस अक़ीदे से लोगों में नई हिम्मत पैदा की लोगों ने गैरों के सामने झुकना छोड़ दिया एहसासे कमतरी ख़त्म हुआ लोगों में अज़मत व एहतरामे इन्सानियत का जज़्बा पैदा हुआ।

(2) आप ﷺ की आमद से पहले लोग मुख़्तलिफ़ ज़ात बिरादरियों में , क़बीलों में आला व अदना दर्जों में बटे हुए थे और तबक़ाती निज़ाम हैवानियत और दरिन्दगी की हदें पार कर चुका था। बराबरी का तसव्वुर ख़त्म हो चुका था आप ﷺ ने बनी नौए इन्सान पर यह एहसान किया के उसे वहदते इन्सानी का तसव्वुर अता फ़रमाया और क़ौमियत , इलाक़ाईयत, वतनियत के तमाम बुत गिरा दिए और क़ुरआन की ज़बान में यह ऐलान फ़रमा दिया के

يا ايها الناس انا خلقنا كم من ذكر و انثى وجعلنا كم شعوبا وقباءل لتعارفوا ان اكرمكم عند الله اتقاكم ان الله عليم خبير

“ऐ लोगों हम ने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें शाखें और क़बीले किया के आपस में पहचान रखो बेशक अल्लाह के यहां तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है बेशक अल्लाह जानने वाला है ख़बरदार है।"

आप ﷺ ने सदा लगाई के

يا ايها الناس ان ربكم واحد وان اباكم واحد كلكم من آدم وآدم من تراب ان اكرمكم عند الله اتقاكم ولا فضل لعربي على عجمى الا بالتقوى

“ऐ लोगों तुम्हारा रब भी एक है और बाप भी एक तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से बने हैं अल्लाह के यहां तुम में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो परहेज़गार है किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वे की बुनियाद पर”

इरशाद हुआ:

ليس منا دعا الى عصبيت وليس منا قاتل على عصبيت وليس منا من مات على عصبيت

जो असबियत की तरफ़ बुलाए वह हम में से नहीं जो असबियत पर जंग करे वो हम में से नहीं और जिसकी मौत असबियत पर हो वह भी हम में से नहीं और यह अस्बियत यह है के तुम ज़ुल्म पर अपनी क़ौम का नाजायज़ ताव्वुन करो।

(3) इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़

मुत्तहद हो तो बदल डालो निज़ाम ए गुलशन

मुन्तशिर हो तो मरो शोर मचाते क्यों हो?

यह हक़ीक़त है के सब से मोहलिक मरज़ इख़्तिलाफ़ व इन्तेशार है और सबसे मुफ़ीद दवा और इलाज इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ है। अमन के क़याम में इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ का अहम रोल होता है इसलिए आप ﷺ ने तमाम मुसलमानों को इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद से रहने की ताकीद फ़रमाई। तमाम मुसलमानों को एक कलमा की बुनियाद पर बूनियाने मरसूस (सीसा पिलाई हुई दीवार) बनने का हुक्म दिया और इरशाद फ़रमाया के

المؤمن للمؤمن كالبنيان يشد بعضه بعضا

“एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए इमारत के मानिंद है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से की मज़बूती व इस्तेहकाम का बायस होता है”।

आपसी मोहब्बत व ताल्लुक़ में अहले इस्लाम एक जिस्म की तरह हैं एक उज़्व को तकलीफ़ पहुंचती है तो पूरा बदन बेचैन हो जाता है। इख़्तिलाफ़ व इन्तेशार को दीन को मोड़ने वाला अमल बताया गया है और इख़्तिलाफ़ को तबाही का ज़रिया बताया गया है।

(4) अदल ओ इन्साफ़

अगर अदल ओ इन्साफ़ किसी समाज से ख़त्म हो जाए और बे इन्साफ़ी व ज़ुल्म का दौरे दौरा हो जाए तो वह समाज बदअमनी और फ़साद का ठिकाना बन जाता है इस्लाम चूंके तमाम वुजूहे फ़ितरत से हम आहंग है इसीलिए इस की तालीमात में अदल व इन्साफ़ की ताकीद जाबजा नज़र आती है ख़ुद सरवरे कौनैन ﷺ ने अपनों और बेगानों के साथ हर वक़्त अदल का मुआमला फ़रमाया, क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया के

يا ايها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء بالقسط ولا يجرمنكم شنان قوم على الا تعدلوا اعدلوا هو اقرب للتقوى

“ऐ ईमान वालों अल्लाह की ख़ातिर सच्चाई पर क़ायम रहने वाले और इन्साफ़ की गवाही देने वाले बनो किसी गिरोह की दुश्मनी तुम को अपना मुश्तइल न कर दे के इन्साफ़ से फिर जाओ अदल करो यह ख़ुदा तरसी से ज़्यादा मुनासिबत रखता है”।

(5) अख़ुव्वत, भाईचारगी का जज़्बा पैदा हो तो फ़ितना व फ़साद सर उठाने नहीं पाता , हुज़ूर ﷺ ने बेमिसाल अख़ुव्वत मुसलमानों में क़ायम फ़रमाई। क़ुरआन में वाज़ेह तौर पर ऐलान किया गया

انما المؤمنون اخوة

"के तमाम मुसलमान भाई भाई हैं"।

अन्सारे मदीना के दो कबीलों औस व ख़ज़रज की सदियों से चली आ रही अदावत को आप ﷺ ने ख़त्म फ़रमा कर उनके दिल जोड़ दिए और उनमें क़ाबिल ए रश्क़ अख़ुव्वत क़ायम फ़रमाई अन्सार व मुहाजरीन में मुवाख़ात (भाईचारगी) का रिश्ता क़ायम फ़रमाया और हर मुसलमान को हुक्म दिया के अपने भाई की हर हाल में मदद करे मज़लूम को ज़ुल्म से बचाए और ज़ुल्म का हाथ पकड़ कर उसे ज़ुल्म से रोके आप ﷺ ने फ़रमाया के

المسلم من سلم المسلمون من لسانه و يده

"मुसलमान वो है जिसके हाथ और ज़ुबान से दुसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें",

तालीमाते नबूव्वत में अख़ुव्वत की ताकीद इतनी ज़्यादा आई है के इस का इहाता मुश्किल है इसी का नतीजा था के क़र्ने अव्वल का ज़माना अख़ुव्वत का सबसे बड़ा नमूना साबित हुआ।

तालीमाते नबूव्वत के यह चन्द बुनियादी अनावीन थे जिन का यहां ज़िक्र किया गया उसकी रोशनी में इस्लाम का निज़ाम सही तौर से समझा जा सकता है। फिर साथ ही यह भी इरशाद होता है के यही आख़री दीन है। इस में कोई रद्दोबदल नहीं हो सकता गोया अल्लाह जल्ला शानुहू ने ख़ुद ही तमाम गुज़िश्ता मज़ाहिब की तनसीख़ फ़रमादी है। और बनी नौए इन्सान को रसूल ﷺ के ज़रिए एक ऐसा दीन अता फ़रमा दिया है जो दीने फ़ितरत है , जो मुकम्मल तरीन मज़हब है और जिस में बनी नौए इन्सान की तमाम ज़रूरयात का सामान मौजूद है।

इस्लाम की सदाक़त और दीने फ़ितरत होने का इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है के वो इस्लाम जिसको शुरू में रसूल अकरम ﷺ के मुक़द्दस घर के सिर्फ़ तीन फ़र्द ने क़ुबूल किया था मगर एक मुख़्तसर से अरसे में पूरी दुनिया पर छा गया इसलिए नहीं के

इसकी तब्लीग़ की गई थी बल्कि इसलिए के इस में मक़बूल होने की और दुनिया को अपने अन्दर जज़्ब करने की सलाहियत मौजूद थी दोस्त और दुश्मन जिसने भी इसकी हक़ीक़तों पर ग़ौर किया इसी का होकर रह गया न मुख़ालफ़ीन की सऊबतें उसको इस्लाम से हटा सकीं और न हुकूमत की तलवारें, बस जिसने दीने इस्लाम क़ुबूल किया वो इसी का शैदा बन कर रह गया।

और इस्लाम की ख़ुसूसियत का इस से भी अंदाज़ा लगाएं दुनिया में जितने भी मज़ाहिब आए उनकी किताबें बदल गईं। उनके उसूल बदल गए। उनकी तालीमात बदल गईं। लेकिन इस्लाम है साढ़े चौदह सौ साल गुज़र जाने के बाद भी इस इल्हामी किताब क़ुरआने करीम का एक एक नुक्ता , एक एक ज़ेरो ज़बर जूं का तूं महफ़ूज़ है। उसके बुनियादी अक़ायद फ़ौलाद की चट्टान की तरह इस इल्हाद व बे दीनी के ज़माने में मुस्तहकम हैं। उसके मानने वालों में तो कमज़ोरियां और खामियां पैदा होती रही हैं और होती रहेंगी। लेकिन यह फ़ितरी मज़हब आज अपनी तमाम नूरानी तजल्लियो् के साथ जलवागर है और सुबह क़यामत तक जलवागर रहेगा। इसकी सदाक़त और सच्चाई का इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है के साढ़े चौदह सौ साल गुज़र जाने के बाद आज भी इसमें रौज़ ए अव्वल की तरह जाज़बियत और कशिश मौजूद है।

इस्लाम अगर दीने फ़ितरत न होता तो क्या वह इस दुनिया का साथ दे सकता था जिसने गुज़िश्ता पांच सौ साल के अन्दर हैरान कुन तरक़्क़ी की है। इतनी बड़ी माद्दी तरक़्क़ी जो तख़्लीक़े आलम से लेकर पांच सौ साल क़ब्ल तक कभी नहीं हुई थी। लेकिन यह हक़ीक़त है कि दुनिया के इन्तहाई तरक़्क़ी कर जाने के बावजूद इसकी तालीमात और रहनुमाई की आज भी दुनिया मोहताज है। अगर दीने फ़ितरत न होता तो बनी नौए इन्सान ने इसे भी उस तरह छोड़ दिया होता जिस तरह साबिक़ा मज़ाहिब को हालात का साथ न देने की वजह से तर्क कर दिया था। लेकिन यह तो ऐसा मुकम्मल दीने फ़ितरत है जिसे छोड़ने की कोशिश के बावजूद भी नहीं छोड़ा जा सकता और जिस से इन्तहाई बे एतनाई इख़्तियार करते हुए भी सहारा लिए बग़ैर किसी का गुज़ारा हो ही नहीं सकता

नामूसे सहाबा और मसलके अहले सुन्नत

मोहम्मद मुहाफ़िज़ मिस्बाही

सहाबा ए इकराम वह ख़ुश नसीब अफ़राद हैं जिन्होंने महबूबे ख़ुदा ﷺ की हयाते ज़ाहिरी में सर की आंखों से ईमान की हालत में बहालते बेदारी आपके रुख़ की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल किया आप ﷺ का ज़माना ए मुबारक पाया हुज़ूर अलेह सलाम की सोहबत इख़्तियार की, ज़बाने रिसालत से कुछ सुना या क़ुर्बत व ज़ियारत की चन्द घड़ियां नसीब हुई हों और हालते ईमान पर ही विसाल हुआ।

सहाबा ए इकराम रदि अल्लाहु अनहुम की तारीफ़ें क़ुरआन व अहादीस में मुताअद्दिद जगहों पर मज़कूर हैं। चुनान्चे अल्लाह ताला ने इरशाद फ़रमाया

وَلٰكِنَّ اللهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ

तर्जुमा: “और लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ईमान को किया और इसे तुम्हारे दिलों में नक़्श कर दिया और कुफ्र व बदकारी और नफ़रमानी को तुम्हारे लिए नापसंद किया है, यही लोग हिदायत पाने वाले हैं”।

दूसरी जगह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाता है:

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ

तर्जुमा: “मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं और जो उनके साथ हैं वह काफ़िरों पर बहुत सख़्त हैं और आपस में बड़े मेहरबान हैं, तू उन्हें रुकू सजदे करते देखेगा इस हाल में के वह अल्लाह तआला का फ़ज़ल और उसकी रज़ा तलाश करते हैं”।

याराने नबी ﷺ की शानो-शौकत और फ़ज़लो सरफ़राज़ी अहादीसे मुबारक में बहुत आई है।

عن جابر بن عبد الله قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : "إن الله اختار أصحابي على العالمين سوى النبيين والمرسلين

हज़रत जाबिर रदि अल्लाहु अनहु बयान करते हैं कि आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया बेशक अल्लाह तआला ने नबियों और रसूलों के अलावा तमाम लोगों पर मेरे सहाबा को फ़ज़ीलत दी है।

सहाबा ए इकराम रदि अल्लाहु अनहु को बुरा भला कहने वाला मलऊन है और उसका कोई अमल क़ुबूल नहीं।

إذا رأيتم الذين يسبون أصحابي فقولوا لعنة الله على شركم

“यानी जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा भला कहते हैं तो उनसे कहो के तुम्हारे शर पर ख़ुदा की लानत हो”।

दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया:

من سب أصحابي فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين لا يقبل الله منه صرفا ولا عدلا

“यानी जिसने मेरे सहाबा को बुरा भला कहा उस पर अल्लाह की फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की लानत है अल्लाह तआला उसकी मिसाल और फ़र्ज़ क़ुबूल नहीं फ़रमाता”

एक मक़ाम पर आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया

أصحابي كالنُّجومِ بأيِّهمُ اقتديتُمُ اهتديتُم

“मेरे सहाबा सितारों की मानिंद हैं जिस की भी पैरवी करोगे राहयाब हो जाओगे”।

जमहूर अहले इस्लाम का मौक़िफ़ है कि हुज़ूर ए अकरम ﷺ के तमाम सहाबा ए इकराम की ताज़ीम व तौक़ीर वाजिब है किसी भी सहाबी की तौहीन व तन्क़ीस कबीरा गुनाह है और तमाम के तमाम इमाम, आदिल, फ़ुक़्हा मोअतबर और मुस्तनद हैं।

शरह अक़ाइद में है: “सहाबा ए इकराम के मुतअल्लिक़ अच्छा गुमान रखना और उन्हें हक़ की मुख़ालिफ़त से पाक समझना वाजिब है क्योंकि वो दीन वालों के लिए नमूना और हक़ की मारिफ़त का दारोमदार हैं”।

मज़कूरह सुतूर से वाज़ह हो गया के तमाम सहाबा ए इकराम आदिल हैं उनकी ताज़ीम व तौक़ीर तमाम लोगों पर वाजिब है यही मसलके अहले सुन्नत व जमाअत है।

हम मीलाद क्यों मनाते हैं?

मोहम्मद निहाल अली क़ादरी

पेशे लफ़्ज़:

अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया जिसका मफ़हूम यह है के जब तुम अपने रब का फ़ज़ल और उसकी रहमत पा जाओ तो उसके फ़ज़ल और रहमत पा जाने पर ख़ूब ख़ूब ख़ुशी मनाओ। अल्लाह तआला के इस फ़रमाने इबरत निशान पर अमल करते हुए हम अहले सुन्नत व जमाअत नबी ए अकरम ﷺ की पैदाइश के मौक़े पर ख़ुशी का इज़हार करते हैं। आपस में एक दूसरे को तहनियत पेश करते हैं और ख़ुशी को जश्न ए ईद मिलादुन्नबी ﷺ से ताबीर करते हैं। लेकिन कुछ लोग इसके मुख़ालिफ़ हैं और हमारे इस अमल पर तरह तरह के एतिराज़ात करते हैं और बड़े ख़ास एहतमाम के साथ उसका रद्दे बलीग़ करते हैं और ईद मिलादुन्नबी ﷺ को बिदअत बताते हैं। लिहाज़ा अपनी इस तहरीर में वाज़ेह करेंगे हम मीलाद नबी ﷺ क्यों मनाते हैं? और साथ मुख़ालेफ़ीन के कुछ एतराज़ात के जवाबात भी देंगे। अल्लाह तआला के मुबारक नाम से इसकी इब्तिदा है और उसी पर भरोसा है।

ईद और मीलाद के मायने:

ईद के लुग़वी मायनी जशन, त्योहार, तक़रीब हर वो दिन जिसमें किसी साहिब ए फ़ज़ल या किसी बड़े वाक़्या की याद मनाते हैं। (मिस्बाहुल लुग़ात)

और इस्तिलाह में ईद उस ख़ास दिन को कहते हैं जिस में अल्लाह तआला की इबादत की जाती है और जो अल्लाह तआला की तरफ़ से बन्दों की ज़ियाफ़त का दिन है और उसमें रोज़ा रखना मकरूह है।

मीलाद के लुग़वी मायनी पैदाइश के हैं अब ईद मिलादुन्नबी ﷺ का मतलब होगा नबी ﷺ की पैदाइश की ख़ुशी।

सरकार ﷺ की तारीखे विलादत:

हुज़ूरे अकदस ﷺ की तारीख़े विलादत में इख़्तिलाफ़ है लेकिन तमाम उम्मते मुस्लिमा और जम्हूर उल्माए इस्लाम का मौक़िफ़ है वो 12 रवियुल अव्वल शरीफ़ मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ईसवी है। इसी तारीख़ को सरकारे दो आलम ﷺ पैदा हुए इसी तारीख़ को सदियों से अहले सुन्नत व जमाअत हुज़ूर की आमद पर ख़ुशी मनाते हैं और तरह तरह एहतिमाम करते हैं और तमाम आलम ए इस्लाम में इसी तारीख़ को अपने तरीक़े से सरकार की आमद की ख़ुशी मनाई जाती है।

क़ुरआन और मीलाद:

किसी की मीलाद मनाना क़ुरआन के मुख़ालिफ़ नहीं हैं इस वजह से क़ुरआने अज़ीम में ख़ुद मुख़्तलिफ़ लोगों की विलादत का तज़किरह किया गया है और तज़किरह भी ऐसा जो मक़ामे मदह में वाक़ेअ हुआ है। चुनान्चे क़ुरआने अज़ीम में इरशाद हुआ हज़रत याहया अलैह सलाम के बारे में

وسلام عليه يوم ولد

तर्जुमा: “और सलाम हो उस दिन पर जिस दिन हज़रत याहया अलैहि सलातो वस्सलाम पैदा हुए”

और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इरशाद हुआ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

والسلام علي يوم ولدت

“सलाम हो उस दिन पर जिस दिन मैं पैदा हुआ”।

किस शान से उन पैग़म्बरों की विलादत का तज़किरह क़ुरआने अज़ीम में मौजूद है और बाक़ायदा विलादत का ज़िक्र है। जब उनकी विलादत पर सलाम भेजना क़ुरआने करीम के

मुताबिक़ और क़ुरआने करीम में मौजूद है तो सय्यदुल अन्बिया ﷺ का मीलाद मनाना और नबी की पैदाइश के दिन नबी पर दुरूद व सलाम भेजना क्यों कर ग़लत होगा। हरगिज़ हरगिज़ ग़लत नहीं होगा बल्कि क़ुरआने अज़ीम फ़ुरक़ाने हमीद के ऐन मुताबिक़ होगा। जब क़ुरआन अज़ीम में इन पैग़म्बरों की पैदाइश पर सलाम भेजा गया है तो नबी ﷺ की विलादत पर सलाम भेजना क्यों कर जायज़ नहीं होगा और ख़ुशी मनाना क्यों कर जायज़ नहीं होगा

हम मीलाद क्यों मनाते हैं?

क़ुरआने अज़ीम में अल्लाह तबारक व तआला ने सूरह यूनुस में इरशाद फ़रमाया जिसका मफ़हूम यह है

“ऐ महबूब तुम इरशाद फ़रमा दो जब अल्लाह की रहमत और उसका फ़ज़्ल पा जाओ तो उसकी रहमत और उसके फ़ज़्ल पा जाने पर ख़ूब ख़ूब ख़ुशी मनाओ। यह तुम्हारे माल जमा करने से बेहतर है”

यहां से बात वाज़ेह हो जाती है जब रब तआला का फ़ज़ल किसी को मिले जब रब तआला की रहमत किसी को मिले तो चाहिए के वह रब तआला की रहमत और उसके फ़ज़्ल पर ख़ूब ख़ूब ख़ुशी मनाए अब ज़रा देखिए रब तआला ने अपनी रहमत पर ख़ूब ख़ूब ख़ुशी मनाने का हुक्म दिया है अब बात वाज़ह हो जाएगी के हम मीलाद क्यों मनाते हैं अल्लाह तबारक व तआला ने इरशाद फ़रमाया ऐ महबूब हमने तमाम जहान वालों के लिए तुम्हें रहमत बना कर भेजा। तो हमारे आक़ा ﷺ रब तआला की रहमत हैं और सरापा रहमत हैं और सबसे बड़ी रहमत हैं और दूसरी जगह अल्लाह तबारक व तआला ने इरशाद फ़रमाया जिसका मफ़हूम यह है अल्लाह तबारक व तआला ने एहसान फ़रमाया मोमिनों पर के उनमें अपने नबी ﷺ को मबऊस फ़रमाया। अल्लाह तबारक व तआला ने बेशुमार फ़ज़्ल व एहसान किए किसी भी फ़ज़्ल पर अपना एहसान नहीं जताया लेकिन जब अपने हबीबे पाक अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बारी आई तो रब तआला ने फ़रमाया के रब तआला का एहसान है के उसने अपने रसूल ﷺ को तुम में मबऊस फ़रमाया यानी रब तआला का ऐसा

फ़ज़्ल हैं नबी ﷺ जिस पर अल्लाह तआला एहसान जता रहा है। तो पता यह चला के नबी से बढ़ कर कोई रहमत नहीं है नबी से बढ़ कर कोई अल्लाह का फ़ज़्ल नहीं है तो जब अल्लाह का सबसे बड़ा फ़ज़्ल और अल्लाह की सबसे बड़ी रहमत हमें जिस दिन मिलें तो क्यों न हम उस दिन जश्न मनाएं और आपस में एक दूसरे को तहनियत करें क्योंकि क़ुरआने अज़ीम में ख़ुद फ़रमा दिया गया के रब तआला के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर ख़ूब ख़ूब खुशियां मनाओ तो लिहाज़ा हमारा मीलादे नबी ﷺ मनाना यह क़ुरआने अज़ीम के ऐन मुताबिक़ है मुख़ालिफ़ नहीं है न ही नाजायज़ व बिदअत है।

हुज़ूर ﷺ ने भी अपना मीलाद मनाया:

रिवायत में आता है सरकारे मदीना ﷺ पीर के दिन रोज़ा रखा करते थे हुज़ूर ﷺ की बारगाह में अर्ज़ किया के हुज़ूर इस दिन रोज़ा क्यों रखते हैं? तो हुज़ूर ﷺ ने इस पर इरशाद फ़रमाया के इस दिन मेरी पैदाइश हुई थी। यानी पीर का दिन मेरी पैदाइश का दिन है इस लिए मैं अपनी पैदाइश की ख़ुशी में अल्लाह तबारक व तआला के लिए रोज़ा रखता हूं उसकी इबादत करता। जब नबी ए करीम ﷺ अपनी विलादत की ख़ुशी का इज़हार रोज़ा रख कर फ़रमा रहे हैं तो उम्मती क्यों न नबी की विलादत पर ख़ुशी का इज़हार कर सकता है? ज़रूर कर सकता है नबी करीम ﷺ की विलादत की ख़ुशी में रोज़ा भी रख सकता है और ग़रीबों मिस्कीनों यतीमों को खाना भी खिला सकता है और दूसरे तरीक़ों (जो शरियत से न टकराए) से भी अपनी ख़ुशी का इज़हार कर सकता है यह बिल्कुल जायज़ और मुस्तहसन है।

मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से जश्ने ईद मिलादुन्नबी ﷺ पर किए जाने वाले चन्द ऐतराज़ात और उनके जवाबात:

ऐतराज़ नम्बर 1:

मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से एक ऐतराज़ यह क्या जाता है के जश्ने ईद मिलादुन्नबी सहाबा इकराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम से साबित नहीं है। जब सहाबा ने नहीं मनाया है जो काम सहाबा ने नहीं किया तो वो काम क्यों कर जायज़ हो सकता है?

जवाब- यह ऐतराज़ अक्सर मीलाद के दुश्मन करते रहते हैं और यह ऐतराज़ और सवाल महज़ जिहालत पर मबनी है और दीन के उसूल व क़वानीन से अदमे वाबस्तगी का सिला है मैं इन ऐतराज़ करने वालों से कहूंगा क्या जो काम सहाबा से साबित नहीं है वो काम शरियत में नाजायज़ है या हराम है क़ुरआने करीम में कौनसी आयते करीमा है जिसमें फ़रमाया गया है के जो काम सहाबा से साबित न हो वो हराम है या बिदअत है या कौनसी हदीस है जिसमें फ़रमाया गया है जो काम सहाबा से साबित नहीं है वह हराम है, नाजायज़ है, बिदअत है अगर एसी कोई नस हो तो हमें भी दिखाएं ताकि हम भी अमल करें। और मुख़ाल्फ़ीन के इस ख़ुद साख़्ता उसूल की तरफ़ नज़र की जाए तो पूरी उम्मत हराम और नाजायज़ और बिदअत करने से नहीं बच सकती इसलिए बेशुमार काम ऐसे हैं जो सहाबा ए इकराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम ने नहीं किए हैं वो किए जा रहे हैं जैसा के मुख़ालेफ़ीन के सीरतुन्नबी के जलसे वगैरह करना यह सहाबा से कहां साबित है कोई मुख़ालिफ़ नहीं दिखा सकता और दीगर काम हैं जो सहाबा से साबित नहीं है जो किए जाते हैं और जायज़ व मुस्तहसन हैं लिहाज़ा यह ऐतराज़ करना के सहाबा ने नहीं किया यह सहाबा से साबित नहीं है महज़ बातिल है और सहाबा से किसी बात का सुबूत न होना उसके नाजायज़ होने की दलील नहीं है।

ऐतराज़ नम्बर 2:

इस्लाम में ईदें दो ही हैं तीसरी ईद मीलाद कहां से आ गई?

जवाब- यह भी बिल्कुल ग़लत और सरासर झूठ है इस्लाम में सिर्फ दो ईदें हैं हदीस में यौमे अरफ़ा को ईद का दिन फ़रमाया गया है। हदीस में यौमे जुमा को मुसलमानों की ईद फ़रमाया गया है। इस से पता चलता है सिर्फ दो ईदें नहीं हैं बस इस्लाम में और भी ईदें हैं यह कहना दो ईदें हैं बातिल है।

ऐतराज़ नम्बर 3:

हम मानते हैं सरकार ने अपना मीलाद मनाया ठीक है लेकिन सरकार ने रोज़ा रख कर मनाया और तुम रोज़ा नहीं रखते जश्ने ईद मिलाद मनाते हो और यह बात ज़ाहिर है जिस दिन रोज़ा होता है उस दिन ईद नहीं जिस दिन ईद होती है उस दिन रोज़ा नहीं जब सरकार ने रोज़ा रखा तो उस दिन ईद नहीं हो सकती।

जवाब 1- यह ऐतराज़ भी जहालत पर मबनी है हदीस में जुमे के दिन को ईद फ़रमाया गया है अब आप देखें रमज़ान में कितने जुमे आते हैं और रोज़े रखे जाते हैं।

जवाब 2- हम जो ईदे मीलाद मनाते हैं तो यहां ईद के लुग़वी मायने मुराद हैं जो ख़ुशी के हैं न के वो इस्तिलाही ईद मुराद है जिसमें रोज़ा रखना मकरूह है जो अल्लाह की तरफ़ से ज़ियाफ़त का दिन है।

जवाब 3- वाज़ेह हो जिस दिन खाना पीना होता है उस दिन भी ईद होती है क़ुरआने पाक में है बनी इस्राईल ने अपने नबी से सवाल किया के अल्लाह हमारे लिए आसमान से दस्तरख़्वान उतारे जिस में तरह तरह का खाना हो और वह दिन हमारे लिए और आने वालों के लिए ईद का दिन होगा इससे साफ़ ज़ाहिर है जिस दिन बनी इस्राईल के लिए आसमान से खाना उतरे वो दिन ईद का दिन हो तो जिस दिन हमारे सरकार तशरीफ़ लाएं जिनके सदक़े सारी नेमतें हैं वो दिन ईद का दिन क्यों नहीं हो सकता?

जश्ने ईद मनाने वालों से गुज़ारिश:

तमाम आशिक़ाने रसूल से भी गुज़ारिश है के जश्ने मीलाद मनाना ग़लत नहीं। बाइसे अजर व सवाब है लेकिन यह सवाब तब ही होगा जब हम जश्ने ईदे मीलाद शरियत के हुदूद में रहकर मनाएं। इस वक़्त मीलाद के मौक़े पर कुछ न अहल लोग इस तरह से ख़ुशी मनाते हैं जो शरियते मुस्तफ़ा में बिल्कुल रवा नहीं है जिससे मुख़ालेफ़ीन को भी मौक़ा मिलता है

अहले सुन्नत पर ऐतराज़ करने का और रब तआला और उसके रसूल की नाराज़गी अलग। लिहाज़ा जश्ने ईदे मीलाद मनाई जाए ज़रूरी मनाई जाए लेकिन शरियत की हद में रहकर। अल्लाह तआला तमाम अहले सुन्नत को शरियते मुस्तफ़ा ﷺ पर अमल की तौफीक़ अता फ़रमाए।

आलाहज़रत और रद्दे बिदआत

मोहम्मद फैज़ुल आरफीन रज़वी

सय्यदी आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी की ज़ात मोहताज ए तआरुफ़ नहीं आपकी शख़्सियत से कौन वाकिफ़ नहीं ? आप की ख़िदमात से अरब व अजम अच्छी तरह आगाह व मुअतरिफ़ हैं आप फ़क़ीदुल मिसाल शख़्सियत हैं हर ज़ाविए से बेनज़ीर व बेमिसाल हैं पिछली चार सदियों से अब तक ज़माने ने अपकी तरह न देखा आपने जिस मैदान में भी क़दम रखा उसे अपनी इन्तिहा तक पहुंचाने की कोशिश की जिस इल्म की जानिब तवज्जो की उसे तक़वियत हासिल हो गई उलूम व फ़ुनून में गहराई और गीराई का आलम यह था कि हर इल्म का माहिर आपकी जानिब ज़रूर रजू करता उनकी अहमियत व इफ़ादियत का अंदाज़ा इस बात से बख़ूबी लगाया जा सकता है कि सय्यदी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी की वफ़ात को सौ साल का एक तवील अरसा गुज़र जाने के बाद आज भी उम्मते मुस्लिमा उनके फ़ैज़ से मुस्तफ़ीद हो रही हैं आपकी तसानीफ़ से दुनिया आज भी इस्तिफ़ादा फ़रमा रही है। आपकी तसानीफ़ से आज भी फ़िरक़ा ए बातिला का सद्दे बाब किया जाता है। इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने जिस भी फ़िरक़े की तरदीद का इरादा किया उसे बख़ूबी निभाया और उसे उसके अन्जाम तक पहुंचाया आपने पूरी ज़िन्दगी शरियते मुहम्मदिया की पैरवी और सुन्नते नबवी की तरवीज व इशाअत में बसर की यही वजह है दुनिया में हर जानिब आज भी आपकी ख़िदमात का चर्चा हो रहा है। इस वजह से मुबल्लिग़े इस्लाम अल्लामा अब्दुल अलीम मेरठी अलेह रहमा ने फ़रमाया था

तुम्हारी शान में जो कुछ कहूं उससे सिवा तुम हो

क़सीमे जाने इरफ़ां ऐ शहे अहमद रज़ा तुम हो।

क़ारेईने इकराम! इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने उलूमे दीनिया की तरवीजो इशाअत के साथ साथ अपने ज़माने में मुरव्वजा उमूर व बिदआत और ख़ुराफ़ात का भी

भरपूर रद्द किया और मुसलमानों को उनसे बचने का हुक्म भी दिया इस सिलसिले में आपने बहुत सारी किताबें भी तसनीफ़ फ़रमाईं और फ़तावा भी तहरीर फ़रमाए। इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने दीन के शोअबों में मुख़्तलिफ़ जिहात पर काम किया उन्हीं में से एक रद्दे बिदआत व मुनकिरात है।

सजदा ए ताज़ीमी:

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी किसी भी पीरो मुर्शिद के लिए सजदा ए ताज़ीमी के मुतअल्लिक़ पूछे गए एक सवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं: “मुसलमान ऐ मुसलमान ऐ शरियत मुस्तफ़ा ﷺ के ताबए फ़रमान यक़ीन जान सजदा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अलावा किसी के लिए नहीं है। उसके ग़ैर को सजदा इबादत तो यक़ीनन इजमाअन शिर्के मुहीन व कुफ़्रे मुबीन है और सजदा ए तहिय्यत (ताज़ीमी) हराम व गुनाहे कबीरा बिलयक़ीन है”।

एक और मक़ाम पर मज़ीद इरशाद फ़रमाया: “ग़ैरे ख़ुदा को सजदा ए इबादत शिर्क है सजदा ए ताज़ीमी शिर्क नहीं मगर हराम है गुनाहे कबीरा है मुतावातिर हदीसें और मुतावातिर नुसूसे फ़िक़हिया से इसकी हुरमत साबित है। हमने अपने फ़तावा में इसकी हुरमत पर चालीस हदीसें रिवायत की और नुसूसे फ़िक़हिया की गिनती नहीं”।

फ़तावा अज़ीज़िया में है के उसकी हुरमत पर इजमा ए उम्मत है ।

मज़ारात पर बिला ज़रूरत चादरें चढ़ाना:

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी फ़रमाते हैं:

“जब मज़ार पर चादर मौजूद हो और वह अभी पुरानी या ख़राब न हुई हो के बदलने की हाजत हो तो बेकार चादर चढ़ाना फ़िज़ूल है। बल्कि जो दाम (माल) उसमें सर्फ़ करे वली अल्लाह की रूह को ईसाले सवाब के लिए किसी मोहताज को देदें”।

मज़ाराते औलिया का तवाफ़:

मज़ाराते औलिया का तवाफ़ करना या बोसा देना भी ममनूअ है चाहें वह ताज़ीम की नियत से हो इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा उसके बारे में फ़रमाते हैं: "मज़ारात का तवाफ़ जो महज़ बनियते ताज़ीम किया जाए नजायज़ है के ताज़ीम बित्तवाफ़ महज़ बख़ानाए काबा है। मज़ार को बोसा न देना चाहिए। उल्मा इसमें मुख़्तलिफ़ हैं और बेहतर बचना है और इसी में अदब ज़्यादा है"।

औरतों की मज़ारात पर हाज़री:

आज कल कुछ ख़ानक़ाहों पर मर्दों से ज़्यादा औरतों की भीड़ दिखाई देती है उनको इमाम अहले सुन्नत का फ़रमान पढ़ लेना चाहिए। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी से इस सिलसिले में हुक्मे शरई दरियाफ़्त किया गया तो जवाबन इमाम अहले सुन्नत ने इरशाद फ़रमाया: "के यह न पूछो के औरत का मज़ारात पर जाना जायज़ है या नहीं? बल्कि यह पूछो के उस औरत पर किस क़द्र लानत होती है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से? और किस क़द्र साहिबे क़ब्र की जानिब से? जिस वक़्त वो घर से इरादा करती है लानत शुरू हो जाती है और जब तक वह वापस आती है मलायका लानत करते हैं"।

फ़र्ज़ी मज़ारात बनवाना:

बाज़ जाहिल लोगों ने पीरी मुरीदी को अपना धंदा बना रखा है और उनको नमाज़ रोज़े से कोई मतलब नहीं, अहकामे शरियत से कोई सरोकार नहीं, उनका असल मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ लोगों से माल लूटना होता है और यह लोग किसी भी वली अल्लाह का फ़र्ज़ी मज़ार बना कर उस पर चादर वगैरह चढ़ाते हैं, उस पर फातिहा पढ़ते हैं, और उसके साथ असल मज़ार जैसा सुलूक करते हैं। फिर हक़ीक़ते हाल से न वाक़िफ़ लोगों की आमदो

रफ़्त उस जाली मज़ार पर शुरू हो जाती है। उल्मा अवामे अहले सुन्नत को ऐसे लोगों का सख़्ती से बायकॉट करना होगा। इमाम अहले सुन्नत ने फ़र्ज़ी मज़ारात का हुक्म शरई बयान करते हुए फ़रमाया: "फ़र्ज़ी मज़ार बनाना और उसके साथ असल जैसा मामला करना न जायज़ व बिदअत है"।

पर्दे के बारे में पीर और ग़ैरे पीर का शरई हुक्म:

पीरों के पास बेपर्दा जाने वाली औरतों पर इमाम अहले सुन्नत ने सख़्त बरहमी का इज़हार और पर्दे की तलक़ीन करते हुए इरशाद फ़रमाया: "पर्दे के बाब में पीर व ग़ैरे पीर हर अजनबी का हुक्म यकसां है जवान औरत को चेहरा खोल कर भी सामने आना मना है"।

इसी तरह एक मक़ाम पर और मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं: "जिन आज़ा का छिपाना फ़र्ज़ है अगर उन में से कुछ खुला हो जैसे सर के बालों का कुछ हिस्सा, या गले या कलाई, या पेट या पिण्डली का कोई जुज़ तो इस तौर पर तो औरत को ग़ैर महरम के सामने जाना मुतलकन हराम है चाहे वो पीर हो या आलिम"।

बारगाहे रिसालत में हाज़री के आदाब:

इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी बारगाहे रिसालत में हाज़री के आदाब बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं: "ख़बरदार रौज़ा ए रसूल ﷺ की जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो बल्कि जाली शरीफ़ से चार हाथ फ़ासले से ज़्यादा क़रीब न जाओ। यह उनकी रहमत क्या कम है के तुम को अपने हुज़ूर बुलाया, अपने मवाजहे अक़्दस में जगह बख़्शी"।

एक और मक़ाम पर मज़ीद इरशाद फ़रमाया: "रौज़ा ए अनवर का तवाफ़ न करो न सजदा न इतना झुकना के रुकू के बराबर हो, रसूल अल्लाह ﷺ की ताज़ीम उनकी इताअत में है"।

मुरव्वजा ताज़िया दारी:

इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने मुरव्वजा ताज़िया दारी के बारे में इरशाद फ़रमाया: “ताज़िया जिस तरह रायज है यह ज़रूर बिदअते शनीआ है शियों से तशबीह के सबब भी इसकी भी इजाज़त नहीं यह जो बाजे, ताशे, मर्सिया, मातम, बर्क़ परी की तस्वीरें ताज़िए से मुरादें मांगना, उसकी मन्नतें मानना उसे झुक झुक कर सलाम करना, सजदा करना वग़ैरह वग़ैरह इसमें बिदआते कसीरा हो गई हैं और अब इसी का नाम ताज़िए दारी और यह ज़रूर हराम है”।

नियाज़ लंगर वग़ैरह लुटाना:

छतों वग़ैरह से रोटियां, खाने की थैलियां और बिस्कुट नमकीन फेंकने वालों और लूटने वालों के बारे में इरशाद फ़रमाया: “यह ख़ैरात नहीं शुरूरो सय्येयात है और न इरादा ए वजहुल्लाह की यह सूरत है बल्कि नामवरी और दिखावे की और वो हराम है। रिज़्क़ की बेअदबी और ज़ाया करना गुनाह है”।

इन तमाम मज़कूरह बातों से यह बात रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है कि इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी ने किस तरह मुरव्वजा उमूर व बिदआत और ख़ुराफ़ात का रद्दे बलीग़ किया और अवाम को मुतान्ब्बेह फ़रमाया। इमामे अहले सुन्नत ने न सिर्फ उम्मते मुस्लिमा के अक़ायद व नज़रियात की हिफ़ाज़त की बल्कि उन्हें एक बड़े दल दल में फंसने से भी बचाया। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है शरियत मुतह्हरा पर चलने की तौफीक़ अता फ़रमाए हुज़ूर ﷺ की सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। सहाबा ए इकराम से सच्ची मुहब्बत और इताअत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और बिल्ख़ुसूस हमें उन मुरव्वजा उमूरो बिदआत और ख़ुराफ़ात से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

आमीन

ग़ीबत की तबाहकारियां

मोहम्मद साद जीलानी मरकज़ी

لک الحمد یا اللہ

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُم بَعْضاً اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتاً فَكَرِهْتُمُوْهُ ۚ

“और एक दूसरे की ग़ीबत न करो क्या तुम में कोई पसंद रखेगा के अपने मरे भाई का गोश्त खाए। तो ये तुम्हें गवारा न होगा”।

मोहतरम क़ारेईन! अगर आज हम अपने मुआशरे का जायज़ा लें तो हम देखेंगे के हमारे मुआशरे में तरह तरह की ख़राबियां पाई जाती हैं। आज का मुसलमान तरह तरह के गुनाहों में मुब्तिला नज़र आ रहा है। गुनाहे कबीरा हो या सग़ीरा बहरहाल गुनाह है और यह बात भी क़ाबिल ए ग़ौर है के सिर्फ़ शराब नोशी, क़त्ल, ज़िनाकारी और नमाज़ रोज़े को छोड़ना ही सिर्फ़ गुनाह नहीं हैं बल्कि बाज़ गुनाह तो ऐसे भी हैं के बहुत से लोग तो उसको गुनाह ही नहीं जानते, अगर समझते भी हैं तो कसरत के साथ लोग इस में मशग़ूल नज़र आते हैं। और वो गुनाह "ग़ीबत" है। ग़ीबत वो बला और ऐसी ख़तरनाक आग है के जिसमें घर का घर ख़ानदान का ख़ानदान जल रहा है।

मज़कूरह आयते करीमा पर ग़ौर करें और देखें के इस आयते करीमा में फ़रमाया गया है के ग़ीबत करना ऐसा है के अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना। आज बहुत सारे लोगों को देखा जाता है के ग़ीबत करते हैं और कहते हैं हम तो वही कह रहे हैं जो बात उसमें पाई जा रही है।

हदीस पाक की रौशनी में देखें के ग़ीबत क्या है?

तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस पाक है महबूब ए ख़ुदा ﷺ ने सहाबा इकराम रजदि अल्लाह् अनहुम से इरशाद फ़रमाया:

هل تدرون ما الغيبة

क्या तुम जानते हो के ग़ीबत क्या है? तो अर्ज़ किया गया

الله ورسوله اعلم

अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ बेहतर जानते हैं

तो आक़ा ए करीम ﷺ ने फ़रमाया: ग़ीबत यह है के

ذکرک اخاک بما یکرھه

यानी तुम अपने भाई का इस तरह ज़िक्र करो जिसको वो नापसंद करता है।

फिर पूछा गया या रसूल अल्लाह ﷺ अगर वो बात उस में मौजूद हो तो? तो आक़ा ए करीम ﷺ ने फ़रमाया जो बात तुम कह रहे हो अगर वो उस शख़्स में हो तो तुमने उसकी ग़ीबत की और अगर उसमें न हो तो तुमने उस पर तोहमत लगाई।

इस हदीसे पाक में ग़ीबत की तारीफ़ बयान की गई के ग़ीबत क्या है? यानी उसकी तारीफ़ को बयान किया गया है

अब ज़रा देखें के ग़ीबत करना कितना बड़ा गुनाह है अल्लाह के महबूब ﷺ ने इरशाद फ़रमाया के “अपने आपको ग़ीबत से बचाओ बेशक ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है। क्योंकि एक आदमी ज़िना के बाद तौबा करता है तो अल्लाह तआला क़ुबूल कर लेता है”।

और ग़ीबत करने वाले की बख़्शिश उस वक़्त तक नहीं होती जब तक वह शख़्स माफ़ न करे जिस की ग़ीबत की है।

अल्लाह की पनाह ज़िना कितना बुरा फ़ेल और किस क़द्र अज़ीम गुनाह है मगर उससे बुरा और बड़ा जुर्म ग़ीबत का है।

अब ज़रा देखें के ग़ीबत करने वाला किस क़द्र अज़ाब में मुब्तिला होगा? के वह अपने नाख़ून से क़यामत के दिन अपना चेहरा छीलेगा।

हदीस शरीफ़: "महबूब ए ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम ﷺ ने फ़रमाया शबे मेराज मैं ने ऐसी क़ौम को देखा जो अपने चेहरों को अपने नाख़ूनों से छील रहे थे। हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया- या रसूल अल्लाह ﷺ यह वो लोग हैं जो लोगों की ग़ीबत करते थे और उनकी इज़्ज़तों के पीछे पड़ते थे"।

हज़रात! ग़ीबत करने वाला बरोज़े क़यामत किस क़द्र मुसीबत में मुब्तिला किया जाएगा के अपने ही हाथों के नाख़ूनों से चेहरे को नोच नोच कर काट रहा होगा। इसलिए आज ग़ीबत से तोबा कर लें ताकि क़यामत की मुसीबतों से निजात मिल सके।

नेकी की किसी बात को हक़ीर नहीं जानना चाहिए:

हज़रत सुलैम बिन जाबिर रदि अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं के मैं अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाहे आलिया में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया के मुझे कोई अच्छी बात बताएं जिससे मैं नफ़ा हासिल करूं तो आक़ा ए करीम ﷺ ने फ़रमाया: "नेकी में किसी बात को हक़ीर (यानी कम) न जानना अगर चे अपने डोल में से प्यासे के बर्तन में पानी डालो और अपने भाई के साथ ख़न्दा पेशानी के साथ पेश आओ, और वो चला जाए तो हरगिज़ उसकी ग़ीबत न करो"।

ग़ीबत करने वाला अपने घर में भी ज़लील रहता है

हदीस शरीफ़: महबूब ए ख़ुदा रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “ऐ लोगों के गिरोह, जो ज़ुबान से ईमान लाए और उनके दिल ईमान लाए। मुसलमान की ग़ीबत न करो और उनकी परदादरी न करो (यानी उनके ऐबों को न खोलो) और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का परदा उठाएगा (यानी उसके छुपे को ज़ाहिर करेगा) तो अल्लाह तआला उसका परदा उठा देगा (यानी अल्लाह तआला उसके सारे छुपे हुए ऐबों को ज़ाहिर फ़रमा देगा) और अल्लाह तआला जिस का परदा उठादे तो उसे घर के अन्दर भी रुसवा करता है”।

हदीसे पाक से पता चला जो शख़्स दूसरों की ग़ीबत करता है तो अल्लाह तआला उस शख़्स को उसके घर के अन्दर भी उसके ऐब खोल देता है और वह शख़्स अपने घर वालों में भी ज़लील व रुसवा हो कर रहता है।

العیاذ باللہ تعالی -

ग़ीबत करने वाला सबसे पहले जहन्नुम में डाला जाएगा:

नायबे मुस्तफ़ा हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रदि अल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं मनक़ूल है के अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही भेजी की जो शख़्स ग़ीबत से तौबा करते वक़्त फ़ौत हो जाए तो वह जन्नत में सबसे आख़िर में दाख़िल किया जाएगा। और जो शख़्स ग़ीबत के गुनाह की हालत में फ़ौत हो वह जहन्नुम में सबसे पहले डाला जाएगा।

हदीसे पाक की रौशनी में ग़ीबत करने वाला ही सबसे पहले दोज़ख़ में डाला जाएगा।

सिर्फ़ इतना कहना के क़द छोटा है या किसी के कपड़ों को देख कर कमी निकालना भी ग़ीबत है

हदीस शरीफ़: “हम मुसलमानों की मां हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं हमारे पास एक औरत आई जब वह वापस जाने लगी तो मैंने हाथ से इशारा किया कि

उसका क़द छोटा है तो महबूब ए ख़ुदा रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ऐ! आयशा तुमने उसकी ग़ीबत की है"।

इस तरह एक रिवायत बयान करती हैं के मैंने आक़ा ए करीम ﷺ की मौजूदगी में एक औरत के बारे में कहा के उस औरत का दामन लम्बा है। तो आप ﷺ ने फ़रमाया क़ै(पलटी) करो क़ै करो। तो मैंने गोश्त के टुकड़े की क़ै की।

ग़ीबत को समझिए और इसके अज़ीम वबाल से बचने की फ़िक्र कीजिए और याद रखिए सिर्फ़ इतना कह देना के फ़लां का क़द छोटा है या उसके कपड़े का दामन लम्बा है यह भी ग़ीबत है। मगर हम तुम सिर्फ़ क़द को ही नहीं बल्कि पूरे जिस्म को ही बुरा कहते नज़र आते हैं और सिर्फ़ कपड़े के दामन को ही नहीं बल्कि मुसलमान भाई के पूरे लिबास को नोच नोच कर फाड़ते नज़र आते हैं। अब अगर हम ऐसा करते हैं तो हमारा हाल क्या होगा?

बुज़र्गों की नज़र में ग़ीबत से बचना इबादत है

आलिमे रब्बानी हज़रत इमाम अहमद ग़ज़ाली रदि अल्लाहु अनहु तहरीर फ़रमाते हैं के अस्लाफ़ (बुजुर्गों) को देखा के वो इबादत सिर्फ़ नमाज़ व रोज़े को ही नहीं समझते थे बल्कि लोगों की बुराई और ग़ीबत से बचने को इबादत समझते थे।

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत अबु इलियास बुख़ारी रदि अल्लाहु अनहु से ग़ीबत के मुताल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि ग़ीबत को सौ बार के ज़िना से बदतरीन समझता हूं।

और हज़रत अबु हफ़्सुल कबीर रदि अल्लाहु अनहु का क़ौल है के मैं किसी इन्सान की ग़ीबत करने को रमज़ान के रोज़े न रखने से बदतर समझता हूं।

और फ़रमाते हैं के जिस ने किसी आलिम की ग़ीबत की तो क़यामत के दिन उसके चेहरे पर लिखा होगा, यह(शख़्स) अल्लाह तआला की रहमत से महरूम है।

बुज़ुर्गों के अक़वाल व बयान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया के ग़ीबत करने वाला ऐसा है जैसे उसने सौ मर्तबा ज़िना किया और आलिमे दीन की ग़ीबत तो और भी बड़ी मुसीबत है के उसकी पेशानी पर लिख दिया जाता है के यह शख़्स अल्लाह तआला की रहमत से महरूम है और नमाज़ का नूर और रोज़े की बरकत ग़ीबत से ज़ाइल हो जाती है, गोया ग़ीबत करने वाले की नमाज़ और रोज़ा न मक़बूल हो कर रह जाते हैं।

ग़ीबत सुनना भी ग़ीबत है:

नायबे मुस्तफ़ा हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रदि अल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं के ग़ीबत सुनने पर ख़ुश होना और उसकी तरफ़ कान लगाना भी ग़ीबत है और वो इसलिए के जब (ग़ीबत करने वाला) ख़ुशी और ताज्जुब का इज़हार करता है तो ग़ीबत करने वाला ख़ुश होता है और ग़ीबत करने के लिए तैयार होता है। गोया वह इस तरीक़े से उस से ग़ीबत करवाता है। मसलन वह कहता है (यानी ग़ीबत सुनने वाला) ताज्जुब है हम तो उस शख़्स को ऐसा नहीं जानते थे, मैं तो उसे अब तक अच्छा आदमी समझता रहा हूं, मैं तो उसे कुछ और ही समझता रहा, अल्लाह तआला हमें आज़माइश से बचाए। यह सब कुछ ग़ीबत करने वाले की तस्दीक़ है और ग़ीबत करने वाले की तस्दीक़ भी ग़ीबत होती है बल्कि ग़ीबत के वक़्त ख़ामोश रहने वाला भी ग़ीबत में शरीक होता है।

ग़ौर फ़रमाएं के ग़ीबत सुनना और ख़ामोश रहना, न रोकना यह भी ग़ीबत है।

वली ने ग़ीबत सुनी तो मजलिस से चले गए

मशहूर बुज़ुर्ग अल्लाह तआला के वली हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रदि अल्लाहु तआला अन्हु एक दावत में तशरीफ़ ले गए। लोगों ने आपस में कहा के फ़लां शख़्स अभी तक नहीं आया तो एक शख़्स बोला के वो मोटा तो बड़ा सुस्त है। इस पर हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम

रदि अल्लाहु तआला अन्हु अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे: अफ़सोस! मेरे पेट की वजह से मुझ पर यह आफ़त आई है के मैं एक ऐसी मजलिस में पहुंच गया जहां एक मुसलमान की ग़ीबत हो रही है। यह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गए और तीन दिन तक खाना न खाया (और सदमे से बेहाल रहे)।

नेक लोगों की हर बात नेक होती है। यह नेक थे तो ग़ीबत की बात सुनकर मजलिस से चले गए और तीन दिन तक सदमे में रहे ऐसी मजलिस में क्यों गया और खाना तक न खाया।

और एक हम हैं के ग़ीबत ही की मजलिस को तलाश करके जाते हैं और ख़ूब ग़ीबत करते हैं और ग़ीबत को सुनते भी हैं।

ग़ीबत करने से हमारी नेकियां उसके हिस्से में चली जाती हैं के जसकी हम ग़ीबत करते हैं:

आलमे रब्बानी हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रदि अल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं के हज़रत हसन बसरी रदि अल्लाहु तआला अनहु से एक शख़्स ने कहा के फ़लां शख़्स ने आप की ग़ीबत की है तो हज़रत हसन बसरी रदि अल्लाहु अनहु ने उसके पास खजूर का एक थाल भेजा और फ़रमाया के मुझे मालूम हुआ है के तुमने मुझे नेकियों का तोहफ़ा दिया है तो मैं उसका बदला देना चाहता हूं। मुझे माज़ूर समझो! मैं पूरी तरह बदला नहीं दे सकता।

हमारे अस्लाफ़, ग़ीबत का जवाब ग़ीबत से नहीं, बुराई का जवाब बुराई से नहीं बल्कि नेकी और भलाई से दिया करते थे।

इस रिवायत से साफ़ तौर से मालूम होता है के ग़ीबत से हमारी नेकियां उसके हिस्से में पहुंच जाती हैं कि जिसकी हम ग़ीबत करते हैं।

मोहतरम क़ारेईन ग़ीबत बड़ा गुनाह है। अल्लाह तबारक व तआला हमें इस गुनाहे अज़ीम से बचने की तौफीक़ अता फ़रमाए।

गुस्से में ख़ुद पर क़ाबू रखें

गुलाम मुस्तफा नईमी

फ़हद, बेग़ साहब का इन्तहाई मुंह लगा ख़ादिम था उसने फ़ौरन ही नमक मिर्च लगाकर सारी बातें कह सुनाईं..... फ़हद की बात सुनते ही बेग साहब की आंखों में शरारे उतर आए... चेहरा भट्टी में तपने वाले कोयले की तरह सुर्ख़ और बदन शिद्दते ग़ज़ब से कांपने लगा...दांत पीसते हुए कहा:

सय्यद की इतनी हिम्मत के वह हमारे कामों में ऐब निकाले, हमारी सोच और समझ पर सवाल उठाए। वह हमारा ख़ादिम है ख़ादिम! मख़दूम बनने की कोशिश न करे वरना दाना पानी तक को तरस जाएगा...!!

बेग साहब इलाक़े के रसूख़दार शख़्स और पुश्तैनी ज़मीन दार थे...क़ुर्बो जवार के ज़्यादातर अफ़राद उनके ख़ानदानी मुलाज़िम थे... इलाक़े भर में बेग साहब को पीर जैसा दर्जा हासिल था...जिधर नकल जाते, हुजूम आस पास जमा हो जाता... लबों से कोई बात निकलती तो ताईद व तहसीन की आवाज़ें बुलन्द हो जातीं...सतही बातों पर भी पढ़े लिखे लोग इल्मी नुकते, फ़लसफ़याना गहराई समझाते हुए नज़र आते थे!!

आज बेग साहब के पोते की सालगिरह थी... दूर दराज़ के उमरा व रुऊसा की आमद का तांता बंधा हुआ था...क़िस्म क़िस्म के मुरग़न खानों और फलों से दस्तरख़्वान भरा हुआ था...कितनी बस्तियों के अक़ीदत मन्द भी हाज़िर थे... देगों पर देग चढ़ रही थी...बरक़ी क़ुमक़ुमों से पूरी बस्ती जगमगा रही थी... बड़े बड़े शामियाने, ख़ूबसूरत झालरों से हवेली जन्नत निशां बनी हुई थी...बस इसी ताम झाम को देख कर सईद नामी नौजवान ने कह दिया:

जितना ख़र्च सालगिरह जैसी रस्म पर किया जा रहा है काश उस का निस्फ़ भी तालीम पर किया जाता तो ज़्यादा बेहतर होता। लम्बे वक़्त से इस गांव के बच्चे दस किलोमीटर दूर गांव में पढ़ने जाते हैं काश बेग साहब तवज्जो दें और कोई तालीमी इदारा बना दें तो हमारी एक बड़ी ज़रूरत पूरी हो जाए!

माक़ूल तब्सिरे पर ग़ैर माक़ूल तड़का लगा कर बेग साहब के कानों में सूर फूंका गया...बस फिर किया था! बेग साहब के अन्दर का जागीरदार बेदार हो गया... सईद की तल्बी हुई और बग़ैर सफ़ाई लिए डांट फटकार लगाई गई। इतने पर भी आतिशकदा ग़ज़ब ठंडा न हुआ सो उसी वक़्त सईद के वालिद को मुलाज़मत से निकाल दिया गया।

कहने को बेग साहब तालीम याफ़्ता घराने के चश्मो चिराग़ थे लेकिन एहसास बरतरी के ख़ुमार में उन्हेंं क़ुरआनी हिदायत भी याद नहीं आई... अपनी ताक़त दिखाते हुए एक ख़ानदान को अना परस्ती के मज़बह ख़ाने में बेदर्दाना ज़िब्ह कर दिया गया!!

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम बड़े जाह व हश्म वाले बादशाह थे...जिन व इन्स, चरिन्द परिन्द, ख़ुश्की व तरी हर जगह आपकी हुकूमत थी... लेकिन इस क़दर ताक़त व क़ुव्वत के बावजूद जब आप को किसी पर गुस्सा आता तो ऐसा उस्लूबे कलाम इस्तेमाल फ़रमाते जिससे मल्ज़ूम को उज़र ख़्वाही का भरपूर मौका होता था।

एक मर्तबा आप सैर करने के लिए निकले तो परिंदों को जायज़ा लेने पर हुदहुद नामी परिन्दे को ग़ायब पाया:

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ

“और (हज़रत सुलेमान ने) परिंदों का जायज़ा लिया तो कहने लगे मुझे किया हुआ के मैं हुदहुद को नहीं देखता या वो वक़यी हाज़िर नहीं”।"

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ

“ज़रूर मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा या ज़िबह कर दूंगा या (फिर बचाओ में) कोई रोशन सनद मेरे पास लाए”।

हुदहुद ने उज़र में मल्का बिल्कीस की ख़बर दी। तो सख़्त ग़ुस्से के बावजूद हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुदहुद का उज़र क़ुबूल फ़रमाया। क़ुरआनी उस्लूब देखें के किस तरह हज़रत सुलेमान ने अज़ाबे शदीद, ज़िब्ह जैसे सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाए लेकिन अहम ख़बर लाने पर हुदहुद के लिए बचाओ का रास्ता भी रखा।

कभी कभी ऐसा होता है के इन्सान गुस्से में सख़्त अल्फ़ाज़ कह जाता है लेकिन हक़ीक़ते वाक़िया खुलने पर शर्मिन्दा होना पड़ता है। या मुल्ज़िम/मुतहम को नाकरदा गुनाह की सज़ा भुगतना पड़ती है इसलिए बेहतर यही है के सख़्त गुस्से में भी ख़ुद पर क़ाबू रखें और क़ुरआनी उस्लूब इख़्तियार करते हुए सख़्त अल्फ़ाज़ के साथ उज़र का रास्ता भी रखें ताकि किसी को नाकरदा गुनाह की सज़ा न मिले, फ़रमाने ख़ुदा बन्दी है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ

“ऐ ईमान वालों अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो के कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा न दे बैठो फिर अपने किए पर पछताते रह जाओ”।

हुज़ूर सय्यदी आलम ﷺ फ़रमाते हैं:

كفى بالمرء كذبا أن يحدث بكل ما سمع

नबी ए करीम ﷺ ने फ़रमाया:

“आदमी के झूठे होने के लिए यही काफ़ी है के वह हर सुनी सुनाई बात को आगे बयान कर दे”।

हालते ग़ज़ब में किसी बे गुनाह पर ज़ुल्म करना बहादुरी नहीं बुज़्दिली है। नबी करीम ﷺ का फ़रमान है:

لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ

“पहलवान वह नहीं है जो कुश्ती लड़ने में ग़ालिब हो जाए बल्कि असली पहलवान तो वह है जो गुस्से की हालत में अपने आप पर क़ाबू पाए बे क़ाबू न हो जाए”।

इसलिए किसी के कह देने भर से गुस्से में आना और बग़ैर तहक़ीक़े हाल किसी को मुजरिम ठहराना नादानी है। किसी की शिकायत मिले तो पहले साहबे मामला से तहक़ीक़ करें बाद में कोई फ़ैसला करें। ज़रबुल मिस्ल है कमान से तीर और ज़बान से निकला लफ़्ज़ वापस नहीं आता। इसलिए सख़्त गुस्से में भी आसाब पर क़ाबू रखें। ऐसा न हो के गुस्से में कहे गए अल्फ़ाज़ आप के लिए बायसे नदामत बन जाएं और आप मुतास्सिर शख़्स से आंखें न मिला सकें।

ख़्वातीन का तब्लीग़े इस्लाम में किरदार

मोहम्मद जावेद रज़ा मरकज़ी

بسم الله الرحمن الرحيم

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

“तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों (की हिदायत) के लिए ज़ाहिर की गई , तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो”।

नबी करीम ﷺ से क़ब्ल और आप के मुक़द्दस दौर की बहुत सी नामबर ख़्वातीन का ज़िक्र क़ुरआन, हदीस और तारीख़ की कुतुब में मिलता है।

जिस से उनका सब्र, इस्तक़ामात फ़िद दीन, बहादुरी, ईसार, इस्लाम के लिए क़ुर्बानी, और रज़ाए इलाही पर राज़ी रहना आने वाली ख़्वातीन के लिए मसला ए मशअल रहा है।

नबी करीम ﷺ ने जब ऐलान नबुव्वत फ़रमाया उस वक़्त आप की दावत पर लब्बैक कहने वाली सबसे पहली ख़ातून हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु थीं। आप अरब की एक अमीर तरीन ख़ातून थीं मगर इस्लाम के लिए अपनी तमाम दौलत को राहे ख़ुदा में ख़ुशी ख़ुशी ख़र्च कर दिया।

हर लम्हा, हर आन, हर क़दम पर आपने नबी करीम ﷺ का साथ दिया। यहां तक के जब पूरा अरब आप ﷺ का मुख़ालिफ़ बना हुआ था तमाम लोगों ने मूंह मोड़ लिया उस वक़्त इस मुक़द्दस ख़ातून ने अपना सब कुछ इस्लाम के लिए क़ुरबान कर दिया और इसका सिला यह मिला के रब्बे कायनात ने आपको सलाम भेजा।

حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ ، عَنْ عُمَارَةَ ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، قَالَ : أَتَى جِبْرِيلُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ : هَذِهِ خَدِيجَةُ قَدْ أَتَتْ

مَعَهَا إِنَاءٌ فِيهِ إِدَامٌ ، أَوْ طَعَامٌ أَوْ شَرَابٌ ، فَإِذَا هِيَ أَتَتْكَ فَاقْرَأْ عَلَيْهَا السَّلاَمَ مِنْ رَبِّهَا وَمِنِّي وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ فِي الجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ لاَ صَخَبَ فِيهِ ، وَلاَ نَصَبَ

“हज़रत अबु हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जिबराईल अलेह सलाम नबी करीम ﷺ के पास तशरीफ़ लाए और कहा ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ यह ख़दीजा रदि अल्लाहु तआला अन्हा हैं और वो आपके पास आईं हैं इनके पास बर्तन है उस में सालन, खाना या पीने का सामान है तो जब वह आप के पास आयें तो उन्हें रब की जानिब से और मेरी तरफ़ से सलाम कहो और उन्हें एक ऐसे घर की ख़ुशख़बरी सुनाओ जिस में न शोर है और न कोई तकलीफ़”।

इस्लाम की पहली शहीद हज़रत सुमय्या रदि अल्लाहु तआला अन्हा हैं जिनको राहे इस्लाम में इस क़दर अज़ीयतों का सामना करना पड़ा मगर ईमानी क़ुव्वत के सामने ज़ालिमों के हौसले पस्त हो गए और आने वाली ख़्वातीन के लिए एक मिसाल क़ायम कर गईं।

जब हिजरत का हुक्म आया तो पहली हिजरत हब्शा की जानिब की गयी उसमें मर्दों के साथ साथ औरतें भी थीं जिन्होंने इस्लाम की ख़ातिर अपने घरों को खैराबाद कह दिया और इस्लाम की राह में आने वाले मसायब को ख़न्दा पेशानी से लब्बैक कहा।

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हा जो एक फ़क़ीहा और मुहद्दिसा थीं। आपने नबी करीम ﷺ की प्यारी सीरत को अगली नस्लों तक मुन्तक़िल करने में अहम किरदार अदा किया, इशाअते इल्म में पूरी ज़िन्दगी गुज़री यही वजह है के आप के शागिर्दों की के जिन्होंने आप से इल्म हासिल किया एक बड़ी फ़ेहरिस्त मौजूद है।

हज़रत उमर रदि अल्लाहु ताला अन्हु का ईमान लाने का वाक़िया मशहूर व मारुफ़ है आप का इस क़दर दबदबा होने के बावजूद आपकी बहन ने आप की परवाह किए बग़ैर इस्लाम क़ुबूल कर लिया। और जब भाई का सामना हुआ तो बड़ी जुरात मंदी के साथ इस्लाम पर क़ायम रहने का ऐलान भी कर दिया साथ ही अपने भाई को दावते इस्लाम भी पेश की जोकि आज की ख़्वातीन के लिए बहुत बड़ा सबक़ है।

अहदे नबी ﷺ में और उसके बाद भी ख़्वातीन की बहादुरियों की बेशुमार मिसालें मौजूद हैं अगर उनको शुमार किया जाए तो दफ़्तर के दफ़्तर पुर हो जाएं।

जंगों में ज़ख़्मियों की तीमारदारी हो, मैदाने कारज़ार में दुश्मनों के मुक़ाबले में मज़बूत पहाड़ की मानिंद खड़ा होना हो या नबी करीम ﷺ के दिफ़ा में जान की परवाह किए बग़ैर मौजूद रहना, ख़्वातीन ने आने वाली ख़्वातीने इस्लाम के लिए मिसालें क़ायम कर दीं। गोया के इशाअते इल्म, बहादुरी, तब्लीग़े दीन हर मैदान में ख़्वातीने इस्लाम ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

एक औरत अगर चाहे तो वो अपने बच्चों को दीनदार , पक्का आशिक़े रसूल ﷺ बाआसानी बना सकतीं हैं के बच्चे के लिए सबसे पहली दर्सगाह मां की गोद है।

ख़्वातीने इस्लाम ने तरबियते औलाद में वह किरदार अदा किया के उनकी गोद में परवरिश पाने वाले बच्चों ने इस्लाम के लिए जो क़ुर्बानियां पेश कीं वो कुतुब ए तारीख़ के औराक को रौशन किए हुए हैं।

मगर अफ़सोस आज मग़रिबी तहज़ीब का असर क़ौमे मुस्लिम की तहज़ीबो तमद्दुन, तालीमो तरबियत, रहन सहन, उठ बैठ, शादी ब्याह, निज़ामे उमूरे ख़ाना दारी हर जानिब नज़र आता है। गोया के हम कह सकते हैं के कोई गोशा उसके मज़मूम असर से महफ़ूज़ न रह सका नतीजतन पूरे मुआशरे में ग़ैर मामूली तौर पर बिगाड़ पैदा हो गया।

इस बिगड़ते मुआशरे को दुरुस्त करने के लिए ख़्वातीने इस्लाम को अपनी ज़िम्मेदारी समझना निहायत ज़रूरी अम्र है।

इसलिए के औरत समाज का एक अहम रुक्न हैं आज ज़रूरत है के हम अपने घरों में अपनी बच्चियों बहनों को दीनी तालीम से आरास्ता करें और उनकी ज़िम्मेदारियों का एहसास कराएं तब ही एक स्वालेह मुआशरा तशकील दिया जा सकता है बग़ैर मां की

कोशिशों के बच्चों की अच्छी तरबियत का तसव्वुर सिर्फ़ तसव्वुर ही होगा। अगर हम इसको ज़मीनी लेबल पर देखना चाहते हैं तो हमें निस्वां की तालीम का हर जगह मुकम्मल इंतजाम करना होगा जिससे आने वाली नस्लें दीनदार हो सकें

عن أنس بْنِ مَالِكٍ قَالَ: عن النبيِّ صلَّى اللهُ عليهِ وسلَّم أنه قالَ: (طَلَبُ العِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلَىٰ كُلِّ مُسْلِمٍ)

इस हदीसे पाक की मिस्दाक़ ख़्वातीन भी हैं उनके ऊपर भी ज़रूरियाते दीन सीखना इसी तरह लाज़िम व ज़रूरी है जिस तरह मर्दों पर है। हस्बे इस्तिताअत औरतों पर भी तब्लीग़े दीन लाज़िम है।

औरत के लिए पर्दा क्यों

फरदीन अहमद खान रज़वी

जहाँ बना है ज़मानों मकां का ज़ुन्नारी[1]

न है ज़मां न मकां ला इलाहा इल्लल्लाह

अल्लाह तबारक व तआला ने बानी नौ ए इंसान को अशरफुल मख़लूक़ात बनाया है उस के सर पर وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ [1] का ताज रखा है और इंसान की खलकत को

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ[2]

की आला क़ुबा से मुशर्रफ फ़रमाया है ये उस बेमिसलो मिसाल ख़ल्लाक़े कायनात का एहसाने अज़ीम है के उसने इंसान को इतनी खूबियों क़ुव्वतों और तवानाइयों का मरकज़ व महवर बनाया चश्मे बीना इन एहसानाते उज़्मा का मुशाहिदा कर रही है और ख़िरद इस बात की क़ाइल है के अपने मुहसिन और मुनइम हक़ीक़ी का हर आन हर लहज़ा और हर लम्हा शुक्रिया अदा किया जाये ताहम इस बात से भी मजाले इंकार नहीं के उस खलिको मालिक ने हम पर बेशुमार एहसानात की बारिश करने के साथ हमें चंद उमूर का मुकल्लफ़ भी किया है हम पर उन नेमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के साथ साथ ये भी लाज़िम है के फ़राइज़ ओ वाजिबात की अदाएगी शक्ल में इन अहकामाते खुदावन्दी का पासो लिहाज़ करें

अगर दुनिया के कारहाए गिरा से चंद लम्हात निकालने और रोज़ मर्रा की दौड़ भाग से कुछ वक़्त चुराने में कामयाब हों तो ज़रा गौर करें के ये जितने भी एहकामात हैं उन की पासदारी और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की फ़रमाँ बरदारी में किस क़द्र हिकमतें पिन्हा हैं चाहें वो हमारी अक़्ले नपायेदार में आएं या न आएं मगर ये बात यक़ीनी हैं हर हुक्मे खुदा में बन्दे की दुनिया और उकवा का अज़ीम मफ़ाद ज़रूर मौजूद है

दीने इस्लाम उसी ख़ुदाए रेहमान व रहीम का दीने कवीम है जिस में मर्दो औरत दोनों को ही अज़ीम मक़ाम दिया गया है एक सालिमो सलीम मुआशरे की तश्कील के लिए ये दोनों ही सुतून की हैसियत रखते हैं अगर एक भी मुतज़लज़ल हो तो पूरी इमारत ज़ेरो ज़बर हो सकती है इसी लिए मज़हबे मुहज़्ज़ब इस्लाम ने इन दोनों के लिए एक ऐसा मोतदिल और क़ाबिले अमल निज़ाम दिया है जिन में उन के हुक़ूक़ भी मेहफ़ूज़ रहें बाहमी ताल्लुक़ भी बरक़रार रहे और और सही मायने में मसावात हो सके

मगर आज इस पुर आशोब दौर के बारे में क्या कहा जाये जब के इंसान फ़ितरते सलीमा का भी दुश्मन बन बैठा है खुदाई अहकामात पर नुक्ताचीनी करने लगा है और अक़्ले नपायेदार को ही नाखुदा बनाकर अपनी कश्तियों को मझधार में उतार रहा है मिसाल के तौर पर इस शगूफे को ही ले लें आज दुनिया के आज़ाद ख्याल और आज़ाद तबियत लोग ये सवाल बार बार बांगे मुर्ग़ की तरह रोज़ दोहरा हैं के आखिर औरत के लिए पर्दा क्यों '" आइये हम अल्लाह की मदद और उसके इज़्न से इस सवाल का जवाब देने की कोशिश करते हैं ताके लोग ये जान सकें के ये हुक्म ऐन फ़ितरते इंसानी के मुवाफ़िक़ है और औरतों की इस्मतों की हिफाज़त का बेहतरीन सामान है

इस बात से भला किस को इंकार हो सकता है के औरतों की तरफ मर्दों में और मर्दों की तरफ औरतों में रग़बत रख दी गयी है जो के एक फ़ितरी अम्र है मशहूर न्योरो साइंस माहिरा स्टेफनी कासियप्पो की तहक़ीक़ के मुताबिक़

12-areas of your brain work together to release chemicals and hormones that induce the feeling of falling in love, all of which happens in just a fifth of a second, eliciting "floating on cloud nine" feelings similar to that of euphoria-inducing drugs.

[byrdie.com]

"(जब आप: कोई मर्द औरत को या औरत मर्द को देखते हैं) तो आप के दिमाग के 12 हिस्से एक साथ काम करते हैं और केमिकल्स और हार्मोन्स निकलते हैं जिससे प्यार (या जिन्सी इश्तियाल) का एहसास होता है ये सब कुछ सिर्फ सेकंड के पांचवे हिस्से से भी कम वक़्फ़े में हो जाता है जिससे बादलों में उड़ने जैसा एहसास होता है ठीक वैसा ही जैसा मंशियात लेने से होता है" (3)

यानि मर्दो औरत जब एक दूसरे को देखते हैं तो जिन्सी इश्तियाल का पैदा होना लाज़िमी है मगर मज़ीद तहक़ीक़ से ये पता चला है के ये इश्तियाल मर्दो में जल्द बल्कि औरत से कहीं ज़्यादा तेज़ी से असर अंदाज़ होता है साइंस दान कहते है के जब किसी औरत को कोई मर्द देखता है और इतने वक़्फ़े तक के उसके जिन्सी एहसासात मुतहर्रिक हो जाएँ तो उसकी धड़कनें तेज़ हो जाती है होंठ सूखने लगते हैं और वही एहसास बदन में होने लगता है जो मंशियात के इस्तेमाल पर होता है और इस पुरे फ़ितने का अव्वल दरवाज़ा है आँख देखने ही से इंसान खास कर के मर्दों में जिन्सी एहसासात मुतहर्रिक होते हैं ये मेरे अकेले का मानना नहीं The Guardian के एक आर्टिकल के मुताबिक़:

"One thing that could be said to support the notion that men are vulnerable to being sexually aroused by appearance is evidence that suggests male arousal is far more visual in nature than female arousal".

[theguardian.com]

"एक बात जो इस तसव्वुर के सुबूत में कही जा सकती है के मर्द फहश क़िस्म के पहनावे से जिन्सी तौर पर मुतहर्रिक होने के तईं हस्सास है वो ये है के मर्दों में ये फ़ितरी हस्सासियत औरतों के मुक़ाबले ज़्यादा देखने से ताल्लुक़ रखती है" (4)

अगर मनदरजा बाला ग़ुफ़्तगू को दो निकात में जमा करें तो कुछ यूं होगा के, मर्दों में जिन्सी इश्तियाल के दो ही सबब हैं, औरत के जिस्म का नज़र आना और मर्द का उसकी तरफ़

निगाह करना। यही वो असबाब हैं जिनके सबब दुनिया भर में तमाम जिन्सी मुहाज़ पर जरायम सर अंजाम दिए जा रहे हैं। अब फ़क़त ज़रूरत इस बात की है के किसी तरह औरत अपने जिस्म को छुपा ले और मर्द उसकी तरफ़ निगाह न करे, मगर सोचने का मक़ाम है के क्या दुनिया में कोई निज़ाम ऐसा भी मौजूद है? क्या कोई मज़हब ऐसा है जिसने इस तरह का कोई हुक्म दिया हो? मुल्हेदीन तो कहते हैं के मज़हब बेवकूफ़ लोगों का शुग़ल है, मगर क्या कोई ऐसा भी मज़हब है जिसने न्यूरो साइंस के इस बारीक और पेचीदा क़ायदे को हयाते नौ बख़्शी हो? क्या फ़ितरते इन्सानी से इस क़दर हमआहंग और शनासा भी कोई दीन है क्या? आंखें सरापा तजस्सुस होकर आलम ए दुनिया का सफ़र करती हैं, हर गली हर मुहल्ले, हर कूचे पर नज़र करती हैं, उनके सामने दुनिया के तमाम मज़ाहिब हैं, मगर यह क्या सरे गुज़िश्त है! के निगाह जाकर फ़क़त मोहसिने क़ायनात, फ़ख़रे मौजूदात, सय्याहे ला मकां, नाज़िशे हर दो जहां, सय्यदी मुरसलां जनाबे मुहम्मदुर रसूल अल्लाह ﷺ के दीने इस्लाम पर ही रुक जाती हैं।

तेरी निगाहे नाज़ से दोनों मुराद पा गए[2],

अक़्ल गियाबो जुस्तजू इश्क़ हुज़ूरो इज़तिराब।

जी हां! वल्लाहुल अज़ीम! यह मज़हब ए इस्लाम ही है जहां यह बारीकी, यह हिकमतें, यह रानाईयां जलवा फ़िगन हैं। और क्यों न हों! यह उस किर्दगारे आलम का दीन है के जिसने इस दुनिया को बनाया है, उसका दीन ही हक़ है और यही मज़हब इस लायक है के उसकी पैरवी की जाए। यक़ीन नहीं आता तो ख़ुद पढ़िए, क़ुरान मजीद में ख़ुद रब तबारक व तआला फ़रमाता है:

قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ

तर्जुमा- "मुसलमान मर्दों को हुक्म वो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें यह उनके लिए बहुत सुथरा है बेशक अल्लाह को उनके कामों की ख़बर है"।[5]

और फ़रमाया गया:

وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۖ
وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ

तर्जुमा: "और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाओ न दिखाएं मगर जितना ख़ुद ही ज़ाहिर है और दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाले रहें और अपना सिंघार ज़ाहिर न करें"।[6]

अल्लाह् अकबर कबीरा! क़ुर्बान जाइए दीने मतीन इस्लाम पर के जो कुछ हम औरतों की इस्मतों की हिफ़ाज़त के सामान और मर्दों की पाकबाज़ी के असबाब ढूंढ रहे थे, वो सारे के सारे तो इन दो आयात में मिल गए! मैं दुनिया के इन्साफ़ पसंद क़ारेईन से इल्तेमास करूंगा, के ख़ुद फ़ैसला फ़रमाएं, अगर मर्द ग़ैर औरत को देखेगा नहीं और औरत भी बापर्दा होगी तो क्या फ़रीक़ैन में से किसी के भी जिन्सी एहसासात मुश्तइल होंगे? क्या किसी का नफ़्स उसे जिन्सी बेरहरवी पर इतराने पर मजबूर करेगा? क्या कोई इन्सान किसी की मां बहन की इज़्ज़त पामाल करेगा? नहीं हरगिज़ नहीं!

गुज़िश्ता तमाम गुफ्तगू से पता चला के यह जो पर्दे का हुक्म दिया गया है इस्लाम में, यह दरअसल औरत की इफ़्फ़तो इस्मत की हिफ़ाज़त और मर्द के तक़्वा व बातिनी तहारत के तहफ़्फ़ुज़ के लिए दिया गया है। पर्दा किसी भी तरह किसी औरत की तरक़्क़ी में मानेअ नहीं, बल्कि यह तो औरत को वो हिफ़ाज़ती सामान मुहैय्या कराता है जिससे वो मुआशरे में बिला ख़ौफ़ो ख़तर चैन व सुकुन से रह सकती है और तरक़्क़ी पा सकती है।

मक़ाम ए इस्लाह में यह बात कहना बेजा ना होगा के जिस भी इंसान को अपनी सलीमो सालिम तबियत को मजरूह होने से बचाना है उसे चाहिए के मज़हब ए इस्लाम का दामन थाम ले क्योंकि यही वो दीन है जो इन्सानों की फ़ितरत से हमआहंग है और उनकी तमाम तर ज़रूरियात का मुहाफ़िज़ो अमीन है। राक़िम ने माज़ी में कभी एक नज़्म कही थी औरत के उन्वान से जिसका आख़िरी शेर कुछ यूं था-

दुनिया ओ उक़्बा में तेरी जां का हाफ़िज़ है यह दीन[3]

ज़िन्दगी की हर ज़रूरत का मुहाफ़िज़ है यह दीन।

इसी पर अपनी बात ख़त्म करना चाहूंगा, अल्लाह तबारक व तआला हमें इल्मो अमल की दौलत अता फ़रमाए।

REFERENCES:

[1] QURAN E MAJEED :SUREH ISRA, VERSE 70

[2] QURAN E MAJEED :SUREH AT-TEEN, VERSE 4

[3] STEPHANIE CACIOPPO: MAQALA BA-NAAM

Stephanie Cacioppo Neuroimaging of Love: fMRI Meta-Analysis

Evidence Toward New Perspectives in Sexual Medicine.

[4] THE GUARDIAN: MAQALA BA-NAAM

https://www.theguardian.com/science/brain-flapping/2018/jan/25/how-provocative-clothes-affect-the-brain-and-why-its-no-excuse-for-assault

[5]- QURAN E MAJEED :SUREH NOOR,VERSE 30

[6] QURAN E MAJEED :SUREH NOOR, VERSE 31

ASH'AAR

[1]-Dr. MUHAMMAD IQBAL,DARB E KALEEM: ISLAM AUR MUSALMAAN " LA ILAHA ILLALLAAH -

[2] Dr. Muhammad Iqbal , baal e jibreel, zauq o shauq

[3]Fardeen;Nazm; Aurat